भगवती दुर्गा का ध्यान हम चतुर्भुजी, अष्टभुजी एवं दशभुजी के रूप में करते हैं। नौ दिन में भगवती के अलग-अलग स्वरूपों का ध्यान एवं जप किया जाता है। यदि साधक के पास समयाभाव हो तो वह नीचे लिखे ध्यान एवं प्रणाम मंत्रों का जप कर सकता है। जो सप्तशती का पाठ करते हैं, वे भी इन ध्यान एवं प्रणाम मंत्रों का जप कर सकते हैं।

सर्वप्रथम मैं यंहा चतुर्भुजी दुर्गा का ध्यान स्पष्ट कर रहा हूँः-

सिंहस्था शशी-शेखरा मरकत-प्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः।
शंख चक्र-धनुः - शरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।।
आमुक्तांगद-हार-कंकण-रणत्-कांची-क्वणन्-नूपुरा।
दुर्गा दुर्गति-हारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्-कुण्डला।।
।। श्री चतुर्भुजा-दुर्गायै नमः।।

श्री अष्टभुजी दुर्गा

विद्युद्-दाम-सम-प्रभां मृग-पति-स्कन्ध-स्थितां भीषणाम्।
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्-हस्ताभिरासेविताम्।।
हस्तैश्चक्र-गदाऽसि-खेट-विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम्।
विभ्राणामनलात्मिकां शशि-धरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।
।। श्री अष्टभुजी दुर्गायै नमः।।

श्री दश भुजी दुर्गा

कात्यायन्याः प्रवक्ष्यामि, मूर्तिं दश-भुजां तथा।

त्रयाणामपि देवानामनुकारण-कारिणीम्।।
जटा-जूट-समायुक्तामर्धेन्दु-कृत-शेखराम्।
लोचन-त्रय-संयुक्तां, पदमेन्दु-सदृशाननाम्।।
अतसी-पुष्प-वर्णाभां सुप्रतिष्ठां प्रलोचनाम्।
नवयौवन सम्पन्नां, सर्वाभरण -भूषिताम्।।
सुचारू-दशनां तद्-वत् पीनोन्नत-पयोधराम्।
त्रिभंग-स्थान-सस्थानां, महिषासुर-मर्दिनीम्।।
त्रिशूलं दक्षिणे दद्यात्, खड्गं चक्रं क्रमादधः।
तीक्ष्ण-वाणं तथा शक्तिं, वामतोऽपि निबोधत।।
खेटकं पूर्ण-चापं च, पाशमंकुशमूर्ध्वतः।
घण्टां वा परशुं वाऽपि, वामतः सन्निवेशयेत्।।
अधस्तान्महिषं तद्-वद्, वि-शिरस्कं प्रदर्शयेत्।
शिरच्छेतोद्भवं तद्-वद्, दानवं खड्ग-पाणिनम्।।
हृदि शूलेन निर्भिन्नं, निर्यदन्त्र-विभूषितम्।
रक्त-रक्ती-कृतांगश्च, रक्त विस्फारितेक्षणम्।।
वेष्टितं नाग-पाशेन, भृकुटि-भीषणाननम्।
स-पाश-वाम-हस्तेन, धृत-केशं च दुर्गया।।
।। श्री दशभुजी दुर्गायै नमः।।

इसके उपरान्त नवदुर्गाओं के ध्यान तथा प्रणाम मंत्र का उल्लेख किया जा रहा हैः-

वन्दे वांछित -लाभाय, चन्द्रार्ध-कृत-शेखरां।
वृषारूढां शूल-धरां, शैल-पुत्रीं यशस्विनीम्।।
।। श्री शैलपुत्री दुर्गायै नमः।।

दधाना कर-पद्माभ्यामक्ष-माला-कमण्डलू।
देवी प्रसीदतु मयि, ब्रह्म-चारिण्यनुत्तमा।।
।। श्री ब्रह्म-चारिणी-दुर्गायै नमः।।

पिण्डज-प्रवरारूढा, चण्ड-कोपास्त्रकैर्युता ।
प्रसादं तनुते मह्य, चन्द्र-घण्टेति विश्रुता।।
।। श्री चन्द्रघण्टा दुर्गायै नमः।।

सुरा-सम्पूर्ण-कलशं, रूधिराप्लुतमेव च।
दधाना हस्त-पद्माभ्यां, कूष्माण्डा शुभदाऽस्तु मे ।।
।। श्री कूष्माण्डा दुर्गायै नमः।।

सिंहासन-गता नित्यं, पद्मांचित-कर-द्वया।
शुभदाऽस्तु सदा देवी, स्कन्द-माता-यशस्विनी ।।
।। श्री स्कन्द-माता-दुर्गायै नमः।।

चन्द्र-हासोज्ज्वल-करा, शार्दूल-वर-वाहना ।
कात्यायनी शुभं दयाद्, देवी दानव-घातिनी ।।
।। श्री कात्यायनी-दुर्गायै नमः।।

एक-वेणी जपाकर्ण-पूरा नग्ना खरास्थिता।
लम्बोष्ठी कर्णिका-कर्णी, तैलाभ्यक्त-शरीरिणी ।।
वाम-पादोल्लसल्लोह-लता-कण्टक-भूषणा।
वर्धन्-मूर्धं-ध्वजा कृष्णा, काल-रात्रिर्भयंकरी ।।
।। श्री कालरात्रि-दुर्गायै नमः।।

श्वेते वृषे समारूढा, श्वेताम्बर-धरा-शुचिः ।

महागौरी शुभं दद्यान्, महा-देव-प्रमोददा ।।
।। श्री महागौरी-दुर्गायै नमः।।

सिद्ध - गंधर्व - यक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि ।
सेव्य-माना सदा भूयात्, सिद्धिदा सिद्धि-दायिनी।।
।। श्री सिद्धिदा-दुर्गायै नमः।।

श्री बगलामुखी महामन्त्र

ॐ ह्ल्रीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्ल्रीं ॐ स्वाहा।

महाकाल भैरव मंत्र

इस मंत्र का प्रयोग अपने बैरियों के नाश के लिए किया जाता है। नाश कई प्रकार से किया जाता है, जिसके विधान भी अलग-अलग हैं।सामान्य विधान इस प्रकार है-

विनियोगः-

ॐ अस्य श्री महाकाल भैरव मंत्रस्य विराट छंदः, श्री महाकाल देवता हूं बीजं ह्रीं शक्तिः, स्वाहा कीलकं श्री महाकाल भैरव प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।।

ह्रीं से षडंग न्यास करें ।

ध्यान

कोटि-कालानला-भासं चतुर्भुजं त्रिलोचनम्।
श्मशानाष्टक-मध्यस्थं मुंडाष्टक विभूषितम्।।
पंच-प्रेत-स्थितं देवं त्रिशूलं डमरूं तथा ।
खड्ग च खर्परं चैव वाम दक्षिण योगतः ।।

विभ्रतं सुन्दरं देहं श्मशान-भस्म भूषितम्।
नानाशवै क्रीडमानं कालिका-हृदय-स्थितम्।।
लालयन्तं रतासंक्तं घोर-चुम्बन तत्परम्।
गृध-गोमायु संयुक्तं फेरवी-गण-संयुतम्।।
जटापटल शोभाढ्यं सर्व शून्यालय-स्थितम्।
सर्व शून्यं मुण्ड-भूषं प्रसन्न-वदनं शिवम्।।

मंत्र

ॐ नमो भगवते महाकाल भैरवाय कालाग्नि-तेजसे अमुकं (शत्रु का नाम) **मे शत्रुं मारय-मारय पोथय-पोथय हुं फट् स्वाहा।।**

प्रतिदिन एक हजार की संख्या में जप करने से २६ दिन में शत्रु का निग्रह होता है।

ॐ समाप्त ॐ

श्री विपरीत प्रत्यंगिरा (सामान्य विधान)

यदि शत्रु निरंतर आप पर अभिचारिक कर्म कर रहा हो, निरंतर किसी न किसी रूप में आपको आर्थिक, मानसिक, सामाजिक, शारिरिक क्षति पहुंचा रहा हो और आपके भविष्य को चौपट कर रहा हो, तब भद्रकाली के इस स्वरूप, अर्थात विपरीत प्रत्यंगिरा का आश्रय लेना सर्वोत्तम उपाय है। जिस दिन से साधक इस महाविधा का प्रयोग आरम्भ करता है, उसी दिन से ही भगवती भद्र काली उसकी सुरक्षा करने लगती हैं और शत्रु द्वारा किये गये अभिचाारिक कर्म दोगुने वेग से उसी पर लौटकर अपना प्रहार करते हैं। इसके अतिरिक्त राजकीय बाधा, अरिष्ट ग्रह बाधा निवारण में तथा अपना खोया हुआ पद, आस्तित्व ओर गरिमा प्राप्ति में

भी यह विद्या सर्वोत्तम मानी जाती है। साधक की आयु, यश तथा तेज की वृद्धि करने में भी यह विद्या बहुत उत्तम मानी जाती है।

ध्यान

खड्गं कपालं डमरू त्रिशूलं,
सम्बिभ्रती चन्द्रकला वतंसा।
पिंगोर्ध्व-केशो-असित- भीम-दंष्ट्रा,
भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली।।

अर्थः- खडग, कपाल, डमरू तथा त्रिशूल धारण करने वाली देवी भद्र काली, जिनके मस्तक में चंद्रकला सुशोभित है, जिनके केश पीले तथा उपर को उठे हुए हैं और जिनके दांत बहुत ही भयंकर तथा असित रंग के हैं, वे मेरा कल्याण करें।

मंत्र-विधान

विनियोगः- अपने दायें हाथ में जल लेकर निम्नलिखित विनियोग पढ़ें :-

ॐ अस्य श्री विपरीत-प्रत्यंगिरा मंत्रस्य भैरव-ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्री विपरीत प्रत्यंगिरा देवता, ममाभिष्ट सिद्धयर्थे जपे पाठे च विनियोगः।

विनियोग पढ़कर हाथ में लिया हुआ जल भूमि पर छोड़ दें। इसके बाद न्यास करें,यथा-

करन्यासः-
ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। बोलकर अपने दोनें अगूंठों का स्पर्श करें।
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। बोलकर दोनों अंगूठों की बगलवाली उंगली का स्पर्श करें।
ॐ श्री मध्यमाभ्यां नमः।.......बीच की उंगली को छुएं।
ॐ प्रत्यंगिरे अनामिकाभ्यां नमः।... रिंग फिंगर को छुएं।
ॐ मां रक्ष-रक्ष कनिष्ठिकाभ्यां नमः।..... सबसे छोटी उंगली को छुएं।
ॐ मम शत्रून भंजय-भंजय करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः। से पहले दोनों हाथों की हथेलियों को आपस में मिलाएं फिर उनके पिछले भागों का स्पर्श करें।

इसी प्रकार हृदय आदि न्यास करें-

ॐ ऐं हृदयाय नमः। बोलकर हृदय का स्पर्श करें।
ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।....सिर का स्पर्श करें।
ॐ श्री शिखायै वषट्। ...शिखा ....।
ॐ प्रत्यंगिरे कवचाय हुं।...दोनों हाथों के क्रास वाईज कंधों का स्पर्श करें।
ॐ मां रक्ष-रक्ष नेत्र-त्रयाय वौषट्।....नेत्रों का स्पर्श करें।
ॐ मम शत्रून भंजय-भंजय अस्त्राय फट्।...दाहिने हाथ की तर्जनी और मध्यमा उंगली से बायें हाथ की हथेली पर तीन बार ताली बजायें।

दिग्बंधः- (अपनी देह की रक्षा हेतु दिशाओं का बंधन करना होता है। इसके लिए निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए दशों दिशाओं में चुटकी बजाएं।)
मंत्रः- ॐ भूर्भुव स्वः ।
इसके उपरान्त भगवती प्रत्यंगिरा के मूल मंत्र का जप करें।

<u>मूल मंत्रः-</u> **"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यंगिरे मां रक्ष-रक्ष मम शत्रून् भंजय-भंजय फे हुं फट् स्वाहा।"**

एक बार पुनः भगवती का ध्यान करके मंत्र जप करना चाहिए। यदि किसी विशिष्ट प्रयोजन से इस मंत्र का जप करना चाहते हैं तो कृपया निम्नलिखित मोबाईल पर फोन करें। मार्ग दर्शन के लिए कोई शुल्क नहीं है।
9917325788.

प्रत्यंगिरा माला-मंत्र

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ **कुं कुं कुं मां सां खां चां लां क्षां** ॐ **ह्रीं ह्रीं** ॐ ॐ **ह्रीं वां धां मां सां रक्षां कुरू।** ॐ **ह्रीं ह्रीं** ॐ **सः हुं** ॐ **क्षौं वां लां धां मां सां रक्षां कुरू।** ॐ ॐ **हुं प्लुं रक्षां कुरू।**

ॐ **नमो विपरीत प्रत्यांगिरायै विद्या-राज्ञि त्रैलोक्य-वशंकरि सर्व-पीड़ा-अपहारिणि सर्वापन-नाशिनि सर्व-मांगल्य-मांगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिनि मोदिनि सर्व-शास्त्राणां भेदिनि क्षोभिणि तथा परमंत्र-तंत्र-यंत्र-विष-चूर्ण-सर्व**

प्रयोगादीनन्येषां निर्वर्तयित्वा यत्कृतं तन्मे-अस्तु कलिपातिनि सर्वहिंसा मा कारयति, अनुमोदयति मनसा वाचा कर्मणा ये देवा-असुर-राक्षस-आस्ति-र्यगन्योनि-सर्व-हिंसका विरूपेकं कुर्वन्ति मम मंत्र-तंत्र-यंत्र-विष-चूर्ण-सर्व-प्रयोगा-दीनात्म-हस्तेन यः करोति करिष्यति कारयिष्यति तान् सर्वान्येषां निवर्तयित्वा पातय कारय मस्तके स्वाहा।'

नव महाविद्याओं के मंत्र (शत्रु पक्ष के संहार हेतु)

- ॐ सन्तापिनि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून रौद्रय-२ हुं फट् स्वाहा।
- ॐ संहारिणि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून संहारय-२ हुं फट् स्वाहा।
- ॐ रौद्रि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून रौद्रय-२ हुं फट् स्वाहा।
- ॐ भ्रामिणि स्फ्रें-२ मम सपरिवारकस्य शत्रून भ्रामय-२ हुं फट् स्वाहा।
- ॐ जृम्भिणि स्फ्रें-२ मम सपरिवारकस्य शत्रून् जृम्भय-२ हुं फट् स्वाहा।
- ॐ द्राविणि स्फ्रें-२ मम सपरिवारकस्य शत्रून द्रावय-२ हुं फट् स्वाहा।
- ॐ क्षोभिणि स्फ्रें-२ मम सपरिवारकस्य शत्रून क्षोभय-२ हुं फट् स्वाहा।
- ॐ मोहिनि स्फ्रें-२ मम सपरिवारकस्य शत्रून मोहय-२ हुं फट् स्वाहा।
- ॐ स्तम्भिनि स्फ्रें-२ मम सपरिवारकस्य शत्रून स्तम्भय-२ हुं फट् स्वाहा।

◆◆◆

Meditation of Maa vipreet Pratyangira:-

Khadgam kapalam damarum trishulam,
sambibhrati chandrakalavatansa.
pingodharva kesho ashit- bheem danshtra,
bhuyad vibhutyai mam bhadrakali.

Meaning:- The goddess Bhadrakali, who has sword, Kapala, damaru and Trishula in her hands, whose forehead is adorned with half moon, whose hair are yellow and in standing position, and whose teeth are yellow colored and seem very dreadful, that goddess may do my welfare.

Method of vipreet Pratyangira mantra.

At first do Viniyoga taking water in right palm :- Om asya shri vipareet pratyangira mantrasya Bhairav Rishi, anushtup chhandah, shri vipreet pratyangira devta, mamabhisht sidhyarthe jape patthe cha viniyogah.

leave the water on land and later on do Karanyasa:

Aim Angushtthaabhyam namah. (Touch the thumbs)
Om hreem tarjanibhyam namah. (toch the index fingers)
Om Shreem Madhyamabhyam namah.(touch both middle fingers).
Om Pratyangire anamikabhyam namah.(toch bot ring fingers).
Om mam raksha raksh kanishtthikabhyam namah (touch both little fingers with each other).

Om mam shatrun bhanjay bhanjay kartal-kar-prashtthabhyam namah.(At first touch your palm with each other and later on touch their back part.)

After doing kar-nyasa one should do Hraday-nyasa:-

Om aim hradayay namah. (touch you hear with the help of thumb and ring finger, which is called tatva mudra).

Om Hreem shirse svaha (Head)

Om Shreem shikhaye vashata. (shikha)

Om pratyagire kavchaye hum. (touch your sholders in crossing way)

Om mam raksha raksha netra-trayaye- vaushat (touch your three eyes. Third eye is understood on the mid of forehead)

Om mam shatrun bhanjay bhanjay astraye phat. (rub you middle finger on thumb (Chutki) three times around your head and then clap on left palm three times with the help of index and middle fingers)

Later on reading the mantra—" Om Bhoor bhuva svah" make chutaki in every direction.

Doing all these ceremonies recite the below mantra----

"Om Aim Hreem Shreem Pratyangiray mam raksha raksh mam shatroon bhanjay bhanjay phay hum phat svaha."

Mala Mantra

Om Om Om Om Om kum kum kum mam kam kham cham lam ksham om hreem hreem o mom hreem vam dham mam sam raksham kuru. Om hreem hreem om

shah hum om kshaum vam lam dham mam sam raksham kuru. Om om hum plum raksham kuru.

Om namo vipreet- pratyangirayai vidhya-ragyi trailokya vashankari tushti-pushti-kari sarva-pida-apharini sarva-pannashini sarva-mangal-mangalyay shivay sarvarth-sadhini modini sarva-shashtranam bhedini kshobhini tatha par-mantra-tantra-yantra-vish-churn-sarva-pryogadinanyesham nirvartayitva yatkratam tanme-astu kali-patini sarva-hinsa ma karyati, anumodayati mansa vaccha karmana ye deva-asur-rakshasa-stiryag-yoni-sarva-hinsaka virupekam kurvanti mam mantra-tantra-yantra-vish-churna-sarva-prayoga-dinatm-hasten yah karoti-karishyati-kaarishyati taan sarvanyeshan nivart-yitva paatay kaaray mastake svaha.

SARVA TANTRA NIVARINI

Shri maha Kali vipreet pratyangira stotram.

At first do viniyoga:-

Om Om Om asya shri pratyangira mantrasya shri Angira Rishih, Anushtup cchandah, shri Pratyangira devata, hoom beejam, hreem shaktih, kreem keelakam, mamabhishta siddhaye patthe viniyogah.

ANG-NYASA

Shri Angira Rishaye namah shirsi.
Anushtup cchandse namah mukhe.
Shri Pratyangira devataaye namah hradi.
Hoom beejaaye namah guhye.
Hreem shaktaye namah paadayoh.

Kreem keelkaaye namah sarvange.
Mamabhisht siddhaye paatthe cha jape viniyogaaye namah anjalaun.

Meditation

Bhujaish-chaturbhir-dhrat teekshan baan,
dhanurvara-bhishcha shavanghri yugma.
Raktaambara rakta tanas-trinetra,
pratyangireyam pranatam punatu.

Stotram

Om namah sahastra suryekshanaaye shri kantthanadi rupaye purushaye puru hutaye aim maha sukhaye vyapine maheshvaraaye jagat srishti karine eeshanaye sarva vyapine maha ghorati ghoraye om om om prabhaavam darshaya darshaya.

Om Om Om hil hil, Om Om Om vidhyut-jivhe bandh bandh, math math, pramath pramath vidhvansaya vidhvansaya, gras gras piv piv, nashay nashay, trasay trasay vidaray vidaray mam shatrun khahi-khahi, maray maray, mam saparivaram raksh raksh, kari kumbh-stani sarvopadravebhyah.

Om maha meghaugh rashi samvartak vidhyudant kapardini divvy kankambho-ruhavikach mala dharini, parmeshwar-priye! cchindhi-cchindhi, vidravaya vidravay, Devi! pishach nagasur garud kinnar vidhyadhar gandharv yaksh rakshas lokpalan stambhay stambhay, keelay keelay, ghatay ghatay vishvamurti maha tejase Om hram sah mam shatrunam vidhyam stambhaya stambhaya Om hoom sah mam shatrunam mukham stambhay stambhay, Om hoom sah mam shatrunam hastau stambhay stambhay, Om hoom sah mam shatrunam padau stambhay stambhay Om hoom sah mam shatrunam

hastau stambhay stambhay, Om hoom sah mam shatrunam padau stambhay stambhay Om hoom sah mam shatrunam kutumb mukhani stambhay stambhay, sthanam keelay keelay, gramam keelay keelay mandalam keelay keelay
desham keelay keelay sarv siddhi maha-bhagay! Dharkasya saparivarasya shantim kuru kuru, phat svaha, Om Om Om Om Om, am am am am am, hum hum hum hum hum, kham kham kham kham kham, phat svaha. Jai pratyangiray! Dharkasya saparivarasy mam raksham kuru kuru, Om hum sah jai jai svaha.
Om Aim Hreem Shreem Brahmani! siro raksh raksh, hum svaha.
Om Aim Hreem Shreem Kaumari mam vaktram raksh raksh, hum svaha.
Om Aim Hreem Shreem Vaishanavi mam kanttham raksh raksh, hum svaha.
Om Aim Hreem Shreem Naarsinghi mamodaram raksh raksh, hum svaha.

Om Aim Hreem Shreem Indrani! mam naabhim raksh raksh, hum svaha.

Om Aim Hreem Shreem Chamunday! mam guhyam raksh raksh, hum svaha.

Om namo bhagavati, ucchisht chandaalini, trishul, vajra-ankush dharay maans bhakshini, khatvang kapaal vajrasi dhaarini! dah dah, dham dham, sarva dushtaan gras gras Om Aim Hreem Shreem phat svaha.

Om danstraa karaali, mam mantra-tantra-vrandaadeen vish, shastra-abhicharkebhyo raksh raksh svaha.

Istambhini mohini chaiv kshobhini draavini tatha,
jrambhini traasini raudri tatha sanhaarini cha.

shaktayah kram yogen shatru pakshay niyojitah,
dhaaritah saadhakendren sarv shatru nivarini.
Om stambhini! isphrayn mam shatroon stambhay stambhay svaha.
Om Mohini ! Isphrayn mam shatroon mohaya mohaya svaha.
Om Kshobhini ! Isphrayn mam shatroon kshobhay-kshobhay svaha.
Om Dravini ! Isphrayn mam shatroon draavay-draavay svaha.
Om Jrambhini ! Isphrayn mam shatroon jrambhay-jrambhay svaha.
Om Trasini ! Isphrayn mam shatroon traasay-traasay svaha.
Om Raudri ! Isphrayn mam shatroon santaapay-santaapay svaha.
Om Sanhaarini ! Isphrayn mam shatroon sanhaaray-sanhaaray svaha.

(At first recite this stotram 108 times within 7 days).

श्री प्रत्यंगिरा हवन विधि

ॐ प्राणाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा से पांच आहुतियां देकर मूल मंत्र से आहुतियां प्रदान करें। उसके उपरान्त ईशान कोण में बटुक भैरव, अग्नि कोण में योगिनियों, नैर्ऋत्य में क्षेत्रपाल, वायव्य कोण में गणपति, तदोपरान्त छाग बलि प्रदान करनी चाहिए। हवन सामग्री कामना के अनुसार प्रयोग करें ।

श्री प्रत्यंगिरा कवच

देव्युवाचः

भगवन् सर्व धर्मज्ञ सर्वशास्त्रार्थ पारग ।
देव्याः प्रत्यंगिरायाश्च कवचं यत्प्रकाशित।।१।।

भैरव-उवाचः
श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं परमाद्भुतम् ।।२।।
सर्वार्थ साधनं नाम त्रैलोक्ये चातिदुर्लभम् ।
सर्वसिद्धिमयं देवि सर्वेश्वर्य-प्रदायकम् ।।३।।
पठनाच्छ्रवणान्मर्त्यः त्रैलोक्यैश्वभाग्भवेत्।
सर्वार्थ-साधकस्यास्य कवचस्य ऋषिः शिवः।।४।।
छंदोविराट्परा शक्ति-र्जगद्धात्री च देवता ।
धर्मार्थ-काम-मोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्त्तितः।।५।।

पाठ

प्रणवं मे शिरः पातु वाग्भवं च ललाटकम्।
ह्रीं पातु दक्ष नेत्रं में लक्ष्मीर्वामं सुरेश्वरी।।६।।
प्रत्यंगिरा दक्ष कर्णे वामे कामेश्वरी तथा।
लक्ष्मी प्राणं सदा पातु बंधनं पातु केशवः ।।७।।
गौरी तु रसनां पातु, कंठं पातु महेश्वरः।
स्कंधदेशं रतिः पातु, भुजौ तु मकरध्वजः।।८।।
शंखं निधिकरः पातु वक्षः पद्मनिधिस्तथा।
ब्राह्मी मध्यं सदा पातु, नाभिं पातु महेश्वरी।।९।।
कौमारी पृष्ठदेशं तु, गुह्यं रक्षतु वैष्णवी।
वाराही च कटि पातु, चैंद्री पातु पद द्वयम्।।१०।।
भार्यां रक्षतु चामुण्डा, लक्ष्मी रक्षतु पुत्रकान्।
इंद्रः पूर्वे सदा पातु, आग्नेय्यां-अग्नि देवता।।११।।
याम्ये यमः सदा पातु, नैर्ऋत्यां निर्ऋतिस्तथा।
पश्चिमे वरूणः पातु, वायव्यां वायु देवता।।१२।।
सौम्यां सोमः सदा पातु, चैशान्यामीश्वरो विभुः।
उर्ध्वे प्रजापतिः पातु, ह्यध्श्च-अनंत देवता।।१३।।
राजद्वारे श्मशाने च अरण्ये प्रांतरे तथा।
जले स्थले चांतरिक्षे, शत्रुणां निवहे तथा।।१४।।
एताभिः सहिता देवी, चतुर्बीजा महेश्वरी।
प्रत्यंगिरा महाशक्तिः सर्वत्र मां सदावतु।।१५।।
इति ते कथितं देवि, सारात्सारं परात्परम्।
सर्वार्थ साधनं नाम कवचं परमाद्भुतम्।।१६।।

फलश्रुति

अस्यापि पठनात्सद्यः कुबेरोऽपि धनेश्वरः।
इंद्रद्याः सकला देवाधारणात्पठनाद्यतः ।।१७।।
सर्वसिद्धीश्वराः संतः सर्वेश्वर्यम-वाप्तुयुः।
पुष्पांजल्यष्टकं दत्वा मूलेनैव सकृत्पठेत्।।१८।।
संवत्सराकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात्।
प्रीतिमन्यान्तः कृत्वा कमला निश्चला गृहे।।१६।।
वाणी च निवसेद्वक्त्रे सत्यं सत्यं न संशयः।
यो धारयति पुण्यात्मासर्वार्थ-साधनाभिधम्।।२०।।
कवचं परमं पुण्यं सोऽपि पुण्यवतां वरः।
सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्य विजयी भवेत्।।२१।।
पुरूषो दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा।
बहुपुत्रवती भूत्वा धन्यापि लभते सुतम्।।२२।।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्रााणि नैवकृन्तन्तितत्तनुम्।
एतत्कवचमज्ञात्वा यो जपेत्परमेश्वरीं।।२३।।
दारिद्रयं परमं प्राप्य सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात्।

•••••••••

मातृका-सम्पुटित विपरीत प्रत्यंगिरा स्तोत्र

किसी भी प्रकार के शत्रु के निवारणार्थ साधक को निम्नलिखित स्तोत्र का प्रतिदिन दस बार पाठ करना चाहिए।

''ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अं आं इं ईं उं ऊं. ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ विपरीत परब्रह्म महाप्रत्यंगिरे ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अं आं इं ईं उं ऊं. ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं मम सपरिवारकस्य सर्वेभ्यः सर्वतः सर्वदा रक्षां कुरू-कुरू मरण-भयापन-पापनय-त्रिजगतां पररूप-वितायुर्मे सपरिवारकाय देहि-देहि दापय-दापय साधकत्वं प्रभुत्वं च सततं देहि-देहि विश्व रूपे धनं पुत्रान् देहि-देहि मां सपरिवारकस्य

मां पश्येत्तु देहिनः सर्वे हिंसकाः प्रलयं यान्तु मम सपरिवारकस्य शत्रुणां बल-बुद्धि-हानिं कुरू-कुरू तान स-सहायान् स्वेष्ट देवतान् संहारय संहारय स्वाचार-मपनया-अपनय ब्रह्मास्त्रादिनि व्यर्थी कुरू हूं हूं स्फ्रें स्फ्रें ठः ठः फट् फट् ॐ।
''

....

श्री काली प्रत्यंगिरा स्तोत्र

इस स्तोत्र की रचना श्री अंगिरा ऋषि ने मारण हेतु की थी। इसका प्रयोग कभी निष्फल नहीं होता। अच्छी संख्या में जप हो जाने पर इसे लिखकर दायीं भुजा अथवा कण्ठ में धारण करने से शत्रुओं का नाश होता है। समस्त अनिष्ट ग्रहों की शांति, दुष्टों का मर्दन करने तथा समस्त पापों का नाश करने में यह स्तोत्र अति उत्तम माना जाता है।

कृष्ण पक्ष की अष्टमी से लेकर अमावस्या की रात्रि तक यदि प्रतिदिन इसके एक हजार की सख्ंया में पाठ किये जाये तो सहज ही शत्रु पक्ष का विलय हो जाता है।

विनियोग :- अस्य श्री प्रत्यंगिरा मन्त्रस्य श्री अंगिरा ऋषिः, अनुष्टुप छंदः, श्री प्रत्यंगिरा देवता, हूं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रीं कीलकं ममाभीष्ट सिद्धये पाठे विनियोगः।

अंगन्यासः- श्री अंगिरा ऋषये नमः शिरसि।
अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे ।
श्री प्रत्यंगिरा देवतायै नमः हृदि।
हूं बीजाय नमः गुह्ये ।
ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।
क्रीं कीलकाय नमः सर्वांगे। ममाभीष्ट सिद्धये पाठे
विनियोगाय नमः अंजलौ।

ध्यान

भुजैश्-चतुर्भि-र्धृत तीक्ष्ण बाण,

धनुर्वरा-भीश्च शवांघ्रि युग्मा।
रक्ताम्बरा रक्त तनस्त्रि-नेत्रा,
प्रत्यंगिरेयं प्रणतं पुनातु ।।

स्तोत्र

नमः सहस्र सूर्येक्षणाय श्रीकण्ठानादि रूपाय पुरूषाय पुरू हुताय ऐं महा सुखय व्यापिने महेश्वराय जगत सृष्टि कारिणे ईशानाय सर्व व्यापिने महा घोराति घोराय
प्रभावं दर्शय दर्शय।

हिल हिल विद्युतज्जिव्हे बन्ध-बन्ध मथ-मथ प्रमथ-प्रमथ विध्वंसय-विध्वंसय ग्रस-ग्रस पिव-पिव नाशय-नाशय त्रासय-त्रासय विदारय-विदारय मम शत्रून खाहि-खाहि मारय-मारय मां सपरिवारं रक्ष-रक्ष कर कुम्भस्तनि सर्वापद्र-वेभ्यः।

महा मेघौघ राशि सम्वर्तक विद्युदन्त कपर्दिनि दिव्य कनकाम्भो-रूहविकच माला धारिणि परमेश्वरी प्रिये! छिन्धि-छिन्धि विद्रावय-विद्रावय देवि! पिशाच नागासुर गरूड किन्नर विद्याधर गन्धर्व यक्ष राक्षस लोकपालान् स्तम्भय-स्तम्भय कीलय-कीलय घातय-घातय विश्वमूर्ति महा तेजसे हूं सः मम शत्रूणां विद्यां स्तम्भय-स्तम्भय, हूं सः मम शत्रूणां मुखं स्तम्भय-स्तम्भय, हूं सः मम शत्रूणां हस्तौ स्तम्भय-स्तम्भय, हूं सः मम शत्रूणां पादौ स्तम्भय-स्तम्भय, हूं सः मम शत्रूणां गृहागत कुटुम्ब मुखानि स्तम्भय-स्तम्भय, स्थानं कीलय-कीलय ग्रामं कीलय-कीलय मण्डलं कीलय-कीलय देशं कीलय-कीलय सर्वसिद्धि महाभागे! धारकस्य सपरिवारस्य शान्तिं कुरू-कुरू फट् स्वाहा

अं अं अं अं अं हूं हूं हूं हूं हूं खं खं खं खं खं फट् स्वाहा। जय प्रत्यंगिरे! धारकस्य सपरिवारस्य मम रक्षां कुरू-कुरू हूं सः जय जय स्वाहा।

ऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्माणि ! शिरो रक्ष-रक्ष, हूं स्वाहा।

ऐं ह्रीं श्रीं कौमारि! मम वक्त्रं रक्ष-रक्ष, हूं स्वाहा। ऐं ह्रीं श्रीं वैष्णवि! मम कण्ठं रक्ष-रक्ष हूं स्वाहा।

ऐं ह्रीं श्रीं नारसिंहि! ममोदरं रक्ष-रक्ष हूं स्वाहा।

ऐं ह्रीं श्रीं इन्द्राणि! मम नाभिं रक्ष-रक्ष हूं स्वाहा।

ऐं ह्रीं श्रीं चामुण्डे! मम गुह्यं रक्ष-रक्ष हूं स्वाहा।

नमो भगवति, उच्छिष्ट चाण्डालिनि, त्रिशूल वज्रांकुशधरे मांस भक्षिणि, खट्वांग कपाल वज्रांसि-धारिणि! दह-दह, धम-धम, सर्व दुष्टान् ग्रस-ग्रस, ऐं ह्रीं श्रीं फट् स्वाहा।

श्री राज-राजेश्वरी-तर्पण-स्तोत्र

प्रस्तुत स्तोत्र का पाठ भगवती के तर्पण हेतु किया जाता है। इस स्तोत्र का पाठ करते हुए मां त्रिपुर सुंदरी के यंत्र अथवा चित्र पर निरंतर धारा प्रवाहित की जाती है। यदि केवल शहद अथवा गंगाजल में शहद मिलाकर यह धारा प्रवाहित की जाये तो इसके परिणाम स्वरूप साधक की सभी कामनांए पूर्ण होती हैं। लम्बी आयु के लिए शुद्ध घी से तर्पण किया जाता है। लम्बी बीमारी से छुटकारे के लिए साधक को दूध से तर्पण करना चाहिए और सभी कामनाओं की पूर्ति के लिए नित्य प्रति नारियल के जल से तर्पण करना चाहिए।

सर्वप्रथम भगवती श्री राज-राजेश्वरी का ध्यान करें-

ध्यान

बालार्कायुत-तेजसं त्रि-नयनां रक्ताम्बरो-ल्लासिनीम् ।
नानालंकृति-राजमान-वपुषं बालोडुराृ-शेखराम् ।।
हस्तैरिक्षु-धनुः सृणिं सुमशरं पाशं मुदा विभ्रतीम् ।
श्री चक्र-स्थित-सुंदरीं त्रिजगतामाधार-भूतां स्मरेत्।।
बालार्क-मण्डलाभासां चतुर्बाहां त्रि-लोचनाम् ।
पाशांकुश-शरांश्चापं, धारयन्तीं शिवां भजे।।

उपर्युक्तानुसार ध्यान करने के उपरान्त श्री यंत्र में स्थित मां श्री राज-राजेश्वरी का ध्यान करके निम्नांकित स्तोत्र का श्रद्धा पूर्वक पाठ एवं तर्पण करें-

तर्पण-स्तोत्र

छन्दः- पाद-युगां निरूक्ति-सुमुखां शिक्षां च जंघा-युगां,
ऋग्वेदोरू-युगां यजुस्तु सघनां या साम-वेदोदराम् ।
तर्क -न्याय-कुचां श्रुति-स्मृति-करां काव्यादि-वेदाननाम्,

वेदनान्तामृत-लोचनां भगवती-श्रीराज-राजेश्वरीम्।।१।।
कल्याणयुत-पूर्ण-बिम्ब-वदनां पूर्णेश्वरा-नन्दिनीम्,
पूर्णां पूर्ण-परां परेश-महिषीं पूर्णामृता-स्वादिनीम्।
सम्पूर्णां परमोत्तसामृत-कलां विद्यावती भारतीम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम्।।२।।
एकानेकमनेक-कार्य-विविधां कार्यैकंचिद्-रूपिणीम्,
चैतन्यात्मक-एक-चक्र-रचितां चक्रांक-एकाकिनीम्।
भावाभाव-विवर्द्धिनीं भय-हरां सद्-भक्ति-चिन्ता-मणिम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।३।।
ईशाधीश्वर-योगि-वृन्द-विदितां सानन्द-भूतां पराम्,
पश्यन्तीं तनु-मध्यमां विलसतीं श्री भैरवी-रूपिणीम्।
आत्मानात्म-विचारिणीं विवरगां विद्यां त्रि-बीज-त्रयीम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।४।।
लक्ष्यालक्ष्य-निरीक्षणां निरूपमां रूद्राक्ष-माला-धराम्,
साक्षात् कारण-दक्ष-वंश-कलितां दीर्घाक्षि-दीर्घेश्वरीम्।
भद्रां भद्र-वर-प्रदां भगवतीं भद्रेश्वरीं भद्रिणीम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।५।।
ह्रीं-बीजान्वित-नाद-विन्दु-भरितां ॐकार-नादात्मिकां,
ब्रह्मानन्द-घनोदरीं गुणवतीं ज्ञानेश्वरीं ज्ञानदाम्।
इच्छा-ज्ञान-क्रियावतीं जित-वतीं गन्धर्व-संसेविताम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।६।।
हर्षोन्मत्त-सुवर्ण-पात्र-भरितां पीनोन्नता-घूर्णिताम्,
हुंकार-प्रिय-शब्द-ब्रह्म-निरतां सारस्वतोल्लासिनीम्।
सारासार-विचार-चारू-चतुरां वर्णाश्रमा-कारिणीम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।७।।
सर्वज्ञान-कलावतीं स-करूणां सन्नादिनीं नन्दिनीम्,
सर्वान्तर्गत-शालिनीं शिव-तनुं सन्दीपिनीं दीपिनीम्।
संयोग-प्रिय-रूपिणीं प्रियवतीं प्रीति-प्रतापोन्नताम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।८।।
कर्माकर्म-विवर्जितां कुलवतीं कर्मप्रदां कौलिनीम्,

कारूण्यां तनु-बुद्धि-कर्म-निरतां सिंधु-प्रियां शालिनीम्।
पंच-ब्रह्म-सनातनां शव-हृदां ज्ञेयांग-योगान्विताम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।९।।
हस्ते कुम्भ-निभां पयोधर-धरां पीनोन्नतां नौमि ताम्,
हाराद्या-भरणां सुरेन्द्र-विनुतां श्रृंगार-पीठालयाम्।
योन्याकारिणि योनि-मुद्रित-करां नित्यां च वर्णात्मिकाम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।१०।।
लक्ष्मी-लक्षण-पूर्ण-भक्ति-वरदां लीला-विनोद-स्थिताम्,
लाक्षा-रंजित-पाद-पद्म-युगलां ब्रह्माण्ड-संसेविताम्।
लोकालोकित-लोक-काम-जननीं लोक-श्रियांक-स्थिताम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।११।।
ह्रींकारायुत-शंकर-प्रिय-तनुं श्रीयोग-पीठेश्वरीम्,
मांगल्यायुत-पंकजाभ-नयनां मांगल्य-सिद्धि-प्रदाम्।
तारूण्यां तपसार्चितां तरूणिकां तत्रोद्भवां तत्त्विनीम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।१२।।
सर्वेशांग-विहारिणीं स-करूणां सर्वेश्वरीं सर्वगाम्,
सत्यां सर्व-मयीं सहस्र-दलजां सप्तार्णवोप-स्थिताम्।
संगासंग-विवर्जितां शुभकरीं बालार्क-कोटि-प्रभाम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।१३।।
कादि-क्षान्त-सुवर्ण-विन्दु-सुतनुं स्वर्णादि-सिंहासिनीम्,
नाना-वर्ण-विचित्र-चित्र-चरितां चातुर्य-चिन्ता-मणिम्।
चित्तानन्द-विधायिनीं सु-विपुलां रूढ-त्रयां शेषिकाम्
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम।।१४।।
लक्ष्मीशादि-विधीन्द्र-चन्द्र-मुकुटामष्टांग-पीठार्चिताम्,
सूर्येन्द्रग्नि-मयैक-पीठ-निलयां त्रिस्थां त्रिकोणेश्वरीम्।
गोप्त्रीं गुर्विणिं-गर्वितां गगनगां गंगा-गणेश-प्रियाम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम।।१५।।
ह्रीं-कूट-त्रय-रूपिणीं समयिनीं संसारिणीं हंसिनीम्,
वामाचार-परायणां सु-कुलजां बीजावतीं मुद्रिणीम्।
कामाक्षीं करूणार्द्र-चित्त-चरितां श्रीमन्त्र-मूर्त्यात्मिकाम्,

श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम।।१६।।

।।श्री आदि शंकराचार्य-विरचितं श्रीराज-राजेश्वरी-स्तोत्रम्।।

श्री त्रिपुर-सुन्दरी तंत्र-साधना

साधकों के हितार्थ जिस स्तोत्र का उल्लेख मैं यंहा करने जा रहा हूँ, वह भगवती श्रीराज राजेश्वरी का स्तोत्र है, जिसे " **श्रीललिता-लकारादि-शतनाम-स्तोत्र**" के नाम से जाना जाता है। इस स्तोत्र को विधि-विधान से पाठ आदि करने पर षट्कर्मों का साधन होता है। लेकिन यह अति आवश्यक है कि साधक उत्तम गुरू के द्वारा दीक्षित होना चाहिए।

भगवती त्रिपुर सुन्दरी समस्त तंत्रों की आधारभूत शक्ति हैं। तंत्रों में उत्कृष्ट साधना भैरवी चक्र अथवा श्रीचक्र में इन्हीं महाशक्ति का यजन-पूजन होता है।

- प्रस्तुत तंत्रात्मक स्तोत्र का विधान निम्नवत् हैः-
- निर्जन स्थान, श्मशान, निर्जन भवन, शिवालय, तालाब, नदी के किनारे, या एक-लिंग (**एक-लिंग उस स्थान को कहा जाता है, जिस शिवलिंग के चारों ओर पांच कोस तक दूसरा शिवलिंग न हो।) में** पाठ करने से समस्त सिद्धियों की प्राप्ति होती है।
- किसी वेश्या अथवा मासिक धर्म के समय स्त्री के पास बैठकर इस स्तोत्र के एक सौ आठ बार पाठ करने से यह सिद्ध हो जाता है और स्मरण करने मात्र से सिद्धियां प्रत्यक्ष हो जाती हैं।
- एक निश्चित अवधि में इस स्तोत्र की दस हजार आवृतियां करने पर एक पुरश्चरण पूर्ण होता है। पुरश्चरण पूर्ण होने पर यह सिद्ध होकर साधक की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण करने में समर्थ होता है।

- पुरश्चरण के उपरान्त यदि किसी का वशीकरण करना हो तो इस स्तोत्र का एक हजार बार पाठ करें।
- यदि किसी भी लोक की कन्या का वशीकरण करना हो तो नित्यप्रति इस स्तोत्र का पाठ करते हुए धतूरे के फूलों से हवन करें। ऐसा करने से छः माह में समस्त लोकों की कन्याओं का वशीकरण होता है।
- रोग नाश के लिए पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर इस स्तोत्र का १०८ बार पाठ करें।
- किसी निर्जन घर में बैठकर इस स्तोत्र का एक हजार बार पाठ करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है और समस्त लोग साधक के वशीभूत होते हैं।
- यदि कोई शत्रु आपके विरूद्ध कोई अनर्गल वार्तालाप करके आपकी मान-मर्यादा, पद-प्रतिष्ठा, गरिमा को हानि पंहुचा रहा हो तो मंगलवार के दिन प्रेत-वस्त्र लाकर उस पर उस शत्रु का नाम लिखकर उसमें शत्रु की प्राण-प्रतिष्ठा करें और रात्रिकाल में उस वस्त्र को श्मशान भूमि में दबाकर उक्त स्तोत्र का वंही बैठकर दो हजार पाठ करें तो उस शत्रु की जीभ बंध जाती है और वह गूंगा अथवा गूंगे के समान हो जाता है।
- श्मशान भूमि में इस स्तोत्र का पांच हजार बार पाठ करने से समस्त शत्रुओं का नाश हो जाता है।
- यदि शत्रु को मृत्यु का ग्रास बनाना हो तो शनिवार के दिन प्रेत-वस्त्र लाकर, प्रत्येक नाम से सम्पुंटित करके शत्रु का नाम लिखें। तदोपरान्त उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करके मां श्री राज-राजेश्वरी की पूजा काले धतूरे के फूलों से करें। रात्रि में उस वस्त्र को श्मशान भूमि में दबाकर इस स्तोत्र का १०८ बार पाठ करें।

- मंगलवार के दिन प्रेत भूमि में जाकर वंहा से चिता के अंगारे ले आएं और प्रेत-वस्त्र में लपेट कर प्रेत-रस्सी से बांध दें। उसके बाद उसे इस स्तोत्र से दस बार अभिमंत्रित करके दुश्मन के घर में दबा दे। केवल सात दिनों के भीतर ही उस स्थान अथवा पद से शत्रु का उच्चाटन हो जाता है।

- कुमारी पूजा करके श्रद्धा पूर्वक इस स्तोत्र का पाठ करने वाले साधक के असाध्य कार्य सिद्ध होते हैं।

- युद्ध भूमि, शत्रुओं के मध्य, राज-भय और अकाल के समय इस स्तोत्र का पाठ करने से संकट दूर होता है।

- शोधिता उत्तम स्त्री को अपने बांयी ओर बिठाकर जप सहित इस स्तोत्र का पाठ करने से बहुत जल्दी सिद्धि प्राप्त होती है।

- चतुर्दशी के दिन कामिनी के साथ जो दरिद्र व्यक्ति ८ बार स्तोत्र का पाठ करता है, वह कुबेर के समान धनी हो जाता है। **(कामिनी अथवा शोधिता स्त्री को भैरवी भी कहा जाता है।)**

- नित्य-प्रति मां त्रिपुर सुन्दरी की पूजा करके प्रत्येक नाम से हवन करने से साधक को विपुल धन की प्राप्ति होती है।

- इस स्तोत्र से मक्खन को अभिमंत्रित करके बन्ध्या स्त्री को खिलाने से वह पुत्रवती होती है।

- पुत्र की कामना करने वाली स्त्री को इस स्तोत्र का यंत्र बनाकर गले, बांयी भुजा अथवा योनि में रखना चाहिए।

क्रम-दीक्षा से युक्त साधक को ही सिद्धि मिलती है। वह कल्पोक्त सिद्धियों को प्राप्त कर क्रमशः राज्य-वैभव को प्राप्त करता है। वह ब्रह्मा के लेख यानि कि प्रारब्ध को भी मिटाकर संसार-बंधन से छूटकर सभी सिद्धियों को प्राप्त करता है।

सर्वप्रथम दाहिने हाथ में जल लेकर विनियोग करेंः-

विनियोगः- ॐ अस्य श्री ललिता लकारादि शतनाम स्तोत्र मन्त्रस्य राज-राजेश्वर ऋृषिः, अनुष्टुप छंदः श्री ललिताम्बा देवता, धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष प्राप्तयर्थे च षट्कर्म सिद्धयर्थे पाठे विनियोगः।

ऋृष्यादि न्यासः- श्री राज-राजेश्वर ऋृषये नमः शिरसि। अनुष्टप छन्दसे नमः मुखे। श्री ललिताम्बा देवतायै नमः हृदि। धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष साधने च षट्कर्म सिद्धयर्थे पाठे विनियोगः। इसके उपरान्त "ऐं क्लीं सौः" बीजों से कर-षडंग-न्यास करें और प्रयोगों में इसी की योजना करें।

श्री ललिता-लकारादि-शत-नाम-स्तोत्र

।।पूर्व पीठिका।।

कैलास-शिखरासीनं, देव-देवं जगद्-गुरूम्।
पप्रच्छेशं परानन्दं, भैरवी परमेश्वरम् ।।

।। श्री भैरवी-उवाच।।

कौलेश! श्रोतुमिच्छामि, सर्व-मन्त्रोत्तमोत्तमम्।
ललिताया शतनाम, सर्व काम-फल-प्रदम्।।

।।श्री भैरव-उवाच।।

श्रृणु देवि महाभागे! स्तोत्रमेतदनुत्तमम्।
पठनाद् धारणादस्य, सर्व-सिद्धीश्वरो भवेत्।।
षट्-कर्माणि सिद्धयन्ति, स्तवस्यास्य प्रसादतः।

गोपनीयं पशोरग्रे, स्व-योनिमपरे यथा।।

।।विनियोग।।

ललिताया लकारादि, नाम-शतकस्य देवि! ।
राज-राजेश्वरो षिः, प्रोक्तो छन्दोऽनुष्टुप् तथा।।
देवता ललिता-देवी, षट्-कर्म-सिद्ध्यर्थे तथा।
धर्मार्थ-काम-मोक्षेषु, विनियोगः प्रकीर्तितः।।
वाक्-काम-शक्ति (ऐं क्लीं सौः), कर-षडंगमाचरेत्।
प्रयोगे बाला-त्र्यक्षरी, योजयित्वा जपं चरेत्।।

****

।।मूल श्री ललिता लकारादि-शतनाम स्तोत्रम्।।

ललिता लक्ष्मी लोलाक्षी लक्ष्मणा लक्ष्मणार्चिता।
लक्ष्मण-प्राण-रक्षिणी, लाकिनी लक्ष्मण-प्रिया ।।१।।
लोला लकारा लोमेशा, लोल-जिह्व लज्जावती।
लक्ष्या लाक्ष्या लक्ष-रता, लकाराक्षर-भूषिता ।।२।।
लोल-लयात्मिका लीला, लीलावती च लांगली।
लावण्यामृत-सारा च, लावण्यामृत-दीर्घिका ।।३।।
लज्जा लज्जा-मती लज्जा, ललना ललन-प्रिया ।
लवणा लवली लसा, लाक्षकी लुब्धा लालसा ।।४।।
लोक-माता लोक-पूज्या, लोक-जननी लोलुपा ।
लोहिता लोहिताक्षीच, लिंगाख्या चैव लिंगेशी।।५।।
लिंग-गीति लिंग-भवा, लिंग-माला लिंग-प्रिया।
लिंगाभिधायिनी लिंगा, लिंग-नाम-सदानन्दा ।।६।।
लिंगामृत-प्रीता लिंगार्चन-प्रीता लिंग-पूज्या।
लिंग-रूपा लिंगस्था च, लिंगालिंगन-तत्परा ।।७।।
लता-पूजन-रता च, लता - साधक -तुष्टिदा।
लता-पूजक-रक्षिणी, लता -साधन- सिद्धिदा।।८।।
लता - गृह - निवासिनी, लता-पूज्या लताराध्या ।

लता-पुष्पा लता-रता, लता-धारा लता-मयी।९।।
लता-स्पर्शन-सन्तुष्टा, लता-आलिंगन हर्षिता।
लता-विद्या लता-सारा, लता-आचारा लता-निधि।।१०।।
लवंग-पुष्प-सन्तुष्टा, लवंग-लता-मध्यस्था।
लवंग-लतिका-रूपा, लवंग-होम-सन्तुष्टा।।११।।
लकाराक्षर-पूजिता, च लकार-वर्णोद्भवा।
लकार-वर्ण-भूषिता, लकार-वर्ण-रूचिरा ।।१२।।
लकार-बीजोद्भवा तथा लकाराक्षर-स्थिता।
लकार-बीज-निलया, लकार-बीज-सर्वस्वा।।१३।।
लकार-वर्ण-सर्वांगी, लक्ष्य-छेदन-तत्परा।
लक्ष्य-धरा लक्ष्य-घूर्णा, लक्ष-जापेन-सिद्धिदा।।१४।।
लक्ष-कोटि-रूप-धरा, लक्ष-लीला-कला-लक्ष्या।
लोक-पालेनार्चिता च, लाक्षा-राम-विलेपना ।।१५।।
लोकातीता लोपा-मुद्रा, लज्जा-बीज-स्वरूपिणी।
लज्जा-हीना लज्जा-मयी, लोक-यात्रा-विधायिनी।।१६।।
लास्या-प्रिया लय-करी, लोक-लया लम्बोदरी।
लघिमादि-सिद्धि-दात्री, लावण्य-निधि-दायिनी।
लकार-वर्ण-ग्रथिता, लं-बीजा ललिताम्बिका।।१७।।

.....................फल-श्रुति.....................

इति ते कथितं देवि!, गुह्याद् गुह्य-तरं परम्।
प्रातः - काले च मध्यान्हे, सायान्हे च सदा निशि।
यः पठेत् साधक-श्रेष्ठो, त्रैलोक्य-विजयी भवेत्।।१।।
सर्व - पापि - विनिर्मुक्तः, स याति ललिता-पदम्।
शून्यागारे शिवारण्ये, शिव-देवालये तथा।।२।।
शून्य-देशे तडागे च, नदी-तीरे चतुष्पथे।
एक-लिंगे ऋृतु-स्नाता-गेहे वैश्या-गृहे तथा।।३।।
पठेदष्टोत्तर-शत-नामानि सर्व-सिद्धये।
साधको वांच्छां यत्-कुर्यात्, तत्तथैव भविष्यति।।४।।
ब्रह्माण्ड-गोलके याश्च, याः काश्चिज्जगती-तले।

समस्ताः सिद्धयों देवि!, करामलक-वत् सदा।।५।।
साधक - स्मृति - मात्रेण, यावन्त्यः सन्ति सिद्धयः।
स्वयमायान्ति पुरतो, जपादीनां तु का कथा।।६।।
अयुतावर्त्तनाद् देवि!, पुरश्चर्याऽस्य गीयते।
पुरश्चर्या-युतः स्तोत्रः, सर्व-कर्म-फल-प्रदः।।७।।
सहस्त्रं च पठेद्यस्तु, मासार्धं साधकोत्तमः।
दासी-भूतं जगत्-सर्वं, मासार्धाद् भवति ध्रुवम्।।८।।
नित्यं प्रति-नाम्ना हुत्वा, पलाश-कुसुमैर्नरः।
भू-लोकस्थाः सर्व-कन्याः, सर्व-लोक-स्थितास्तथा।।९।।
पातालस्थाः सर्व-कन्याः, नाग-कन्याः यक्ष-कन्याः।
वशीकुर्यान्मण्डलार्धात्, संशयो नात्र विद्यते।।१०।।
अश्वत्थ-मूले पठेत् शत-वारं ध्यान-पूर्वकम्।
तत्-क्षणाद् व्याधि-नाशश्च, भवेद् देवि! न संशयः।।११।।
शून्यागारे पठेत् स्तोत्रं, सहस्रं ध्यान-पूर्वकम्।
लक्ष्मी प्रसीदति ध्रुवं, स त्रैलोक्यं वशिष्यति।।१२।।
प्रेत-वस्त्रं भौमे ग्राह्यं, रिपु-नाम च वेष्टितम्।
प्राण-प्रतिष्ठां कृत्वा तु, पूजां चैव हि कारयेत्।।१३।।
श्मशाने निखनेद् रात्रौ, द्वि-सहस्रं पठेत् ततः।
जिह्वा-स्तम्भनमाप्नोति, सद्यो मूकत्वमाप्नुयात्।।१४।।
श्मशाने पठेत् स्तोत्रं, अयुतार्धं सु-बुद्धिमान्।
शत्रु-क्षयो भवेत् सद्यो, नान्यथा मम भाषितम्।।१५।।
प्रेत-वस्त्रं शनौ ग्राह्यं, प्रति-नाम्ना सम्पुटितम्।
शत्रु-नाम लिखित्वा च , प्राण-प्रतिष्ठां कारयेत्।।१६।।
ततः ललितां सम्पूज्य, कृष्ण-धत्तूर-पुष्पकैः।
श्मशाने निखनेद् रात्रौ, शतवारं पठेत् स्तोत्रम्।।१७।।
ततो मृत्युमवाप्नोति, देव-राज-समोऽपि सः।
श्मशानांगारमादाय, मंगले शनिवारे वा।।१८।।
प्रेत-वस्त्रेण संवेष्टय, बध्नीयात् प्रेत-रज्जुना।
दशाभिमन्त्रितं कृत्वा, खनेद् वैरि-वेश्मनि।।१९।।
सप्त-रात्रान्तरे तस्योच्चाटनं भ्रामणं भवेत्।

कुमारीं पूजयित्वा तु, यः पठेद् भक्ति-तत्परः।।२०।।
न किंचिद् दुर्लभं तस्य, दिवि वा भुवि मोदते।
दुर्भिक्षे राज-पीडायां, संग्रामे वैरि-मध्यके।।२१।।
यत्र यत्र भयं प्राप्तः, सर्वत्र प्रपठेन्नरः।
तत्र तत्राभयं तस्य, भवत्येव न संशयः।।२२।।
वाम-पार्श्वे समानीय, शोधितां वर-कामिनीम्।
जपं कृत्वा पठेद् यस्तु, तस्य सिद्धिः करे स्थिता।।२३।।
दरिद्रस्तु चतुर्दश्यां, कामिनी-संगमैः सह।
अष्ट-वारं पठेद् यस्तु, कुबेर सदृशो भवेत्।।२४।।
श्री ललितां महादेवी, नित्यं सम्पूज्य मानवः।
प्रति-नाम्ना जुहुयात् स, धन-राशिम-वाप्नुयात्।।२५।।
नवनीतं चाभिमन्त्रय, स्त्रीभ्यो दद्यान्महेश्वरि!
वन्ध्यां पुत्र-प्रदं देवि! नात्र कार्या विचारणा।।२६।।
कण्ठे वा वाम-बाहौ वा, योनौ व धारणाच्छिवे !
बहु-पुत्र-वती नारी, सुभगा जायते ध्रुवम्।।२७।।
उग्रं उग्रं महदुग्रं, स्तवमिदं ललितायाः।
सु-विनीताय शान्ताय, दान्तायाति-गुणाय च।।२८।।
भक्ताय ज्येष्ठ-पुत्राय, गुरू-भक्ति-पराय च।
भक्त-भक्ताय योग्याय, भक्ति-शक्ति-पराय च।।२९।।
वेश्या-पूजन-युक्ताय, कुमारी-पूजकाय च।
दुर्गा-भक्ताय शैवाय, कामेश्वर-प्रजापिने।।३०।।
अद्वैत-भाव-युक्ताय, शक्ति-भक्ति-पराय च।
प्रदेयं शत-नामाख्यं, स्वयं ललिताज्ञया।।३१।।
खलाय पर-तन्त्राय, पर-निन्दा-पराय च।
भ्रष्टाय दुष्ट-सत्वाय, परी-वाद-पराय च।।३२।।
शिवाभक्ताय दुष्टाय, पर-दार-रताय च ।
वेश्या-स्त्री-निन्दकाय च, पंच-मकार-निन्दके।।३३।।
न स्तोत्रं दर्शयेद् देवि! मम हत्या-करो भवेत्।
तस्मान्न दापयेद् देवि! , मनसा कर्मणा गिरा।।३४।।
अन्यथा कुरूते यस्तु, स क्षीणायुर्भवेद् ध्रुवम्।

पुत्रहारी च स्त्री-हारी, राज्य-हारी भवेद् ध्रुवम।।३५।।
मन्त्र-क्षोभश्च जायते, तस्य मृत्युर्भविष्यति।
क्रम-दीक्षा-युतानां च, सिद्धिर्भवति नान्यथा।।३६।।
क्रम-दीक्षा-युतो देवि!, क्रमाद् राज्यमवाप्नुयात्।
क्रम-दीक्षा-समायुक्तः, कल्पोक्त-सिद्धि-भाग्भवेत्।।३७।।
विधेर्लिपिं तु सम्मार्ज्य, किंकरत्वं विसृज्य च।
सर्व-सिद्धिमवाप्नोति, नात्र कार्या विचारणा।।३८।।
क्रम-दीक्षा-युतो देवि!, मम समो न संशयः।
गोपनीयं गोपनीयं, गोपनीय सदाऽनघे।।३९।।
स दीक्षितः सुखी साधुः, सत्य-वादी जितेन्द्रियः।
स वेद-वक्ता स्वाध्यायी, सर्वानन्द-परायणः।।४०।।
स्वस्मिन् ललितां सम्भाव्य, पूजयेज्जगदम्बिकाम्।
त्रैलोक्य-विजयी भूयान्नात्र कार्या विचारणा ।।४१।।
गुरू-रूपं शिवं ध्यात्वा, शिव-रूपं गुरूं स्मरेत्।
सदा-शिवः स एव स्यान्नात्र कार्या विचारणा।।४२।।

(श्री कौलिकार्णवे श्री भैरवी-संवादे षट्कर्म-सिद्धि-दायकं श्रीमल्ललिताया लकारादि-शत-नाम स्तोत्रं। सौजन्य से परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान।)

नोटः- जो साधक इस स्तोत्र का मात्र एक बार पाठ करते हैं, उन्हें यह स्तोत्र पूरा, अर्थात् आरम्भ से अन्त तक पढ़ना चाहिए। जो साधक इस स्तोत्र का अनुष्ठान करते हैं, उन्हें प्रथम बार आरम्भ से अन्त तक तथा इसके बाद आरम्भ के केवल १७ श्लोक ही पढ़ने चाहिए। अन्त में पुनः एक बार आरम्भ से अन्त तक, अर्थात स्तोत्र एवं श्रुति-फल भी पढ़ना आवश्यक है।

कामाख्या-साधना

साधना के इस क्रम में यंहा मैं भगवती कामाख्या की साधना का उल्लेख कर रहा हूँ।

कौल-मार्ग शाक्त मार्ग है। यद्यपि शिव और शक्ति सर्वथा अभिन्न हैं, लेकिन कौलाचारी शक्ति तत्व को प्रधान मानते हैं। मूल रूप से यद्यपि शक्ति एक ही है, किन्तु भिन्न-भिन्न काल में अलग-अलग रूप में अलग-अलग उद्देश्य से अवतरित होने के कारण उसके रूप और नाम अलग-अलग हैं। मां कामाख्या,

काली और तारा का मिश्रित स्वरूप माना जाता है। कुछ विद्वान इसे मां षोडशी का स्वरूप भी मानते है।। चारों प्रकार की वाणियों में भगवती कामाख्या परावाक् हैं। काली, तारा और षोडशी की गणना दश महाविद्याओं में क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर मानी जाती हैं, जिनका मिश्रित स्वरूप भगवती कामाख्या हैं।
साधना-विधि :- सर्वप्रथम आचमन आदि करके दांये हाथ में जल लेकर विनियोग करें-

विनियोगः- **ॐ अस्य श्री कामाख्या मन्त्रस्य अक्षोभ्य ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, कामाख्या देवता सर्वसिद्धये जपे विनियोगः।**

इसके उपरान्त न्यास आदि करें-

कर-न्यासः-
ॐ त्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ त्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ त्रूं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ त्रैं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ त्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ त्रः कामाख्यै नमः।

हृदयादि-न्यासः-
ॐ त्रां हृदयाय नमः।
ॐ त्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ त्रूं शिखायै वषट्।
ॐ त्रौं कवचाय हुं।
ॐ त्रैं नेत्र-त्रयाय वौषट्।
ॐ त्रः अस्त्राय फट्।

इस प्रकार न्यास करने के उपरान्त भगवती कामाख्या का ध्यान करेंः-

ध्यान

रक्त-वस्त्रां वरोद्-युक्तां सिन्दूर-तिलकान्विताम्।
निष्कलंक सुधा-धाम-वदन-कमलोज्ज्वलाम्।।1।।
स्वर्णादिन-मणि-माणिक्य-भूषणै-र्भूषितां पराम्।

नाना-रत्नादि-निर्माण-सिंहासनोपरि-स्थिताम्।।२।।
हास्य-वक्त्रां पद्म-राग-मणि-कान्तिमनुत्तमाम्।
पीनोत्तुंग-कुचां कृष्यां श्रुति-मूल-गते-क्षणाम्।।३।।
कटाक्षैश्च महा-सम्पद्-दायिनीं परमेश्वरीम्।
सर्वांग-सुन्दरीं नित्यां विद्याभिः परिवेष्टिताम्।।४।।
डाकिनी-योगिनी-विद्याधरीभिः परिशोभिताम्।
कामिनी-भिर्युतां नानागन्धाद्यैः परिगन्धिताम्।।५।।
ताम्बूलादि-कराभिश्च नायिका-भिर्विराजिताम्।
समस्त-सिद्ध-वर्गाणां प्रणतानां प्रतीक्षणाम्।।६।।
त्रिनेत्रां सम्मोहकरां पुष्प-चापेषु बिभ्रतीम्।
भग-लिंग-समाख्यानं किन्नरीभ्योऽपि श्रृण्वतीम्।।७।।
वाणी-लक्ष्मी-सुधा-वाक्य-प्रति-वाक्य-महोत्सुकाम्।
अशेष-गुण-सम्पन्नां करूणा-सागरां शिवाम्।।८।।

उपरोक्त ध्यान करने के उपरान्त भगवती कामाख्या के मूल मंत्र का यथाशक्ति जप करें। यदि भगवती का पूजनोपचार करना हो तो उन्हें कुंकुम, लाल फूल, सुगंधि, गुडहल के फूल, सिंदूर और मुख्य रूप से कनेर के पुष्प अर्पित करें।

मंत्रोद्धारः-

जृम्भणान्तं त्यक्तपाशं यात्रावारणरोहकम्।
वामकर्णयुतं देवि नादबिन्दुयुतं पुनः।।
एतत्तु त्रिगुणीकृत्य कल्पवृक्षमनुं जपेत्।
एकं वापि द्वयं वापि त्रयं वा जपेत् सुधी।।

अर्थातः- हे देवि! जृम्भणान्त अर्थात्-''त''।
त्यक्तपाश अर्थात्-''अ'' से रहित। (त्)
यात्रावारण अर्थात-''र''।
रोहक अर्थात्-''युक्त''
वामकर्ण अर्थात्-''ई''।
नादविन्दु अर्थात्- ''ँ''।

उपरोक्त स्पष्टीकरण से जो शब्द निकलकर आता है, वह बनता है- ''त्रीं'' । कल्पवृक्ष के समान इस मंत्र का जप करना चाहिए। इस कल्पवृक्ष को तीन

गुना कर, अर्थात्- "त्रीं त्रीं त्रीं" की एक माला, दो माला, तीन माला अथवा चाहे जितनी बार जप करें। इनकी साधना में न तो चक्रशुद्धि की आवश्यकता है, न काल-शोधन की।

जप करने के उपरान्त अपने जप भगवती को समर्पित करें।

....

कुछ विशिष्ट जानने योग्य तथ्य

1. भक्ति बड़ी चीज है:- अनुभव में आया है कि बहुत से साधकों को अभिमान हो जाता है कि वे मां काली के उपासक हैं, अथवा अन्य किसी देवता के उपासक हैं और वे किसी का भी अहित करने में सक्षम हैं। वे बहुत उच्च शक्ति के उपासक हैं अथवा उन्होंने अपने इष्ट देवता के बहुत अधिक संख्या में जप कर लिये हैं और वे सदैव अपराजित रहेंगें। यह सब सम्भव है, लेकिन यदि सामने वाला व्यक्ति किसी अन्य देवता या देवी का उपासक है और उसमें त्याग, सत्यता, शुद्धता, श्रद्धा और अपने देवता के प्रति अनन्य विश्वास और समर्पण भावना है, अंहकार की उपस्थिति उसमें तनिक भी नहीं है तो हो सकता है कि आपके प्रयोगों के द्वारा वह कुछ समय के लिए तो परेशान हो जायेगा, लेकिन कुछ समय पर्यन्त ही उसका सब कुछ ठीक हो जायेगा और घमंडी उपासक को निश्चय ही अपमानित होना पड़ेगा। इस लिए यदि आप साधक हैं तो समस्त गुण अपने आप में लाईये, तभी आपका सफल होना सम्भव है। त्याग, तपस्या, भक्ति, अंहकारहीन, सत्यवादी, तपश्चर्या का पालन करना ही एक साधक का धर्म है। आपने साधना, तपस्या तो बहुत की, लेकिन व्यर्थ में ही उसे लुटा दिया तो एक समय आपको ऐसा दिन भी देखना पड़ेगा, जब आप सामान्य व्यक्ति से भी पराजित हो जायेंगें। और इस समय का सामना करना स्वयं में ही अपमृत्यु के समान है।
2. जब अवांछित दुर्घटनाएं बार-बार होती हों, अचानक ही व्यक्ति कर्ज, असाध्य बीमारी, अनायास ही नुकसान पर नुकसान, लम्बे समय से चली आ रही विपत्तियों का अन्त न होना, ऐसी स्थिति में कोई भी

व्यक्ति यह सोचने के लिए बाध्य हो जाता है कि मेरे घर, व्यवसायिक प्रतिष्ठान आदि पर कोई गलत आत्मा का साया तो नहीं है, अथवा किसी दुश्मन के द्वारा कोई जादू-टोना तो नहीं कर दिया गया है, किसी के द्वारा मूठ तो नहीं चला दी गयी है अथवा किसी के द्वारा कोई अघोरी या श्मशानिक प्रयोग तो नहीं कर दिया अथवा करा दिया गया है। या फिर कालसर्प दोष, पितृ दोष या फिर किसी ग्रह का दोष या परिवार की किसी अतृप्त आत्मा का दोष तो नहीं है। वह बार-बार किसी पंडित, मौलवी या फिर किसी तांत्रिक की खोज में भटकता है और अपना बहुमूल्य समय और धन लुटाता है। यदि किसी व्यक्ति के साथ इस प्रकार की समस्या हो तो सर्वप्रथम निम्नाकित तथ्यों पर विचार करें-

- बहुत से प्रयोग इस प्रकार के होते हैं कि उनका करीब १०० सालों तक भी प्रभाव रहता है। यह मेरा अपना अनुभव है कि अनेक परिवार ऐसे हैं, जिनके पुरखों पर किया गया अभिचार कर्म ५०-६० साल पुराना है, जो आज भी उनका नाश कर रहा है।

- शत्रुतावश किसी का वंश बांध दिया जाता है, या फिर किसी परिवार को शाप होता है। इस स्थिति में होता यह है कि परिवार में संतान ही नहीं होती। यदि होती भी है तो वह किसी असाध्य बीमारी से पीडित रहती है। अथवा घर में कोई व्यक्ति असाध्य बीमारी से पीडित रहता है। उस घर का मुखिया ऋण, अर्थहानि, रोग के कारण इतना अधिक पीडित हो जाता है कि वह धर्म, कर्म आदि के लिए स्वयं को तैयार ही नहीं कर पाता है।

- यदि मृतक व्यक्ति की मुक्ति हेतु कोई कर्म किया जाता है तो जिस आत्मा के प्रभाव के कारण उसकी मृत्यु हुई है, वह उस कर्म को रोक देगी और आपके द्वारा मुक्ति हेतु किये गये किसी प्रयोग का फल मृतक व्यक्ति को नहीं मिल पायेगा। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को स्वयं ही नित्यप्रति उच्च्व कोटि की शक्तियों के पाठ आदि के लिए २-३ घंटों का समय लगाना होगा।

धूमावती साधना :-

- यदि किसी व्यक्ति को विशिष्ट पूजा- अनुष्ठान आदि करने पर भी कोई फल प्राप्त नहीं हो रहा है तो इसका तात्पर्य यह है कि उसके ग्रहों की मारकेश दशा चल रही है, अपने प्रारब्ध का फल उसे भोगना पड़ रहा है। ऐसी स्थिति में उसे धूमावती महाविद्या का आश्रय लेना चाहिए। धूमावती चूंकि वृद्धा, विधवा तथा दरिद्रता और कलह की देवी है, इसलिए उनके अनुष्ठान में विशेष सतर्कता की आवश्यकता है। इनकी साधना सरल नहीं है, क्योंकि वे विघ्नों की अधिष्ठात्री और अमंगला है, इस कारण इनका आवाहन अपने निवास स्थान में नहीं किया जाता है। अतः इनकी उपासना व्यक्ति को खूब सोच-समझकर करनी चाहिए।

धूमावती की साधना रात्रि-काल में ही की जाती है। इस देवी का स्वरूप बड़ा विचित्र है। इनके शरीर का आकार स्थूल है। केश रूखे-सूखे हैं, वेश मलिन है, दोनों स्तन नीचे की ओर लटके हुए हैं, झुके हुए हैं,जैसे किसी वृद्धा स्त्री के होते हैं।

वैसे तो साधारणतया सभी प्रकार की मनोकामनाएं लेकर धूमावती की साधना की जाती है, परन्तु दरिद्रता को दूर करने के लिए, कर्ज से छुटकारे के लिए, किसी को कर्ज दिया हो और वह पैसा वापिस न दे रहा हो, कोई आपको अकारण सता रहा हो, आपकी जमीन-मकान पर कब्जा किये बैठा हो, अनाधिकृत रूप से आपका हक मार रहा हो, घर में हमेशा दरिद्रता, वीरानगी बनी रहती हो, सब कुछ ठीक होते हए भी संतान की प्राप्ति न होना आदि- जब ऐसी स्थितियां दिखायी दें तो भगवती धूमावती की उपासना करना अत्यन्त ही हितकारी होता है। किसी के द्वारा कोख-बंधन कर दिया गया हो, आपका व्यवसायिक प्रतिष्ठान बांध दिया गया हो, रोजगार, आमदनी बांध दी हो, मित्र से, अधिकारी से, घर के लोगों से विद्वेषण, उच्चाटन करा दिया गया हो, तो उसके लिए इन भगवती की उपासना करनी चाहिए।

विश्व में दुख के चार मूल कारण होते हैं- रूद्र, यम, वरूण और नैऋति देवता। इनमें निऋति ही धूमावती हैं। प्राणियों में मूर्च्छा, मृत्यु, असाध्य रोग, कलह, दरिद्रता, शोक आदि ये देवी ही उत्पन्न करती हैं। व्यक्ति का भिखारी बन जाना, पहनने के फटे-पुराने वस्त्र भी उपलब्ध न होना, भूख-प्यास, वैधव्य की स्थिति, असहनीय शोक, पुत्रशोक अथवा संतानहीनता, महाक्लेश आदि- सब धूमावती के ही स्वरूप हैं। इसलिए ही ऐसी परिस्थितयां उत्पन्न होने के कारण धूमावती का अनुष्ठान किया अथवा कराया जाता है।

नैऋति शक्तियां यूं तो सर्वत्र व्याप्त रहती हैं, लेकिन ज्येष्ठा नक्षत्र इनका प्रधान केन्द्र है। इसी नक्षत्र से यह शक्ति जुड़ी हुई है। यही कारण है कि इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति जीवन पर्यन्त दुख-दरिद्रता भोगता है।

प्रत्येक चातुर्मास-आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल तक होता है। इन चार महीनों में नैऋति का साम्राज्य होता है, और देवताओं का सुषुप्ति काल माना जाता है। सन्यासी लोग भी भ्रमण त्याग कर किसी एक स्थान पर रूक जाते हैं। कोई भी शुभ कार्य इन चार महीनों में वर्जित माना जाता है। कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी इसका अन्तिम दिन होता है, जिसे नरक चौदस कहा जाता है। इसी दिन दरिद्रता की देवी धूमावती का गमन होता है और दूसरे ही दिन अमावस्या को रोहिणी नक्षत्र में लक्ष्मी अर्थात् दीपावली का आगमन होता है। यह सब कहने का तात्पर्य यह है कि महाविधा धूमावती की प्रधानता वर्षा काल के चार महीनों में मुख्यतः रहती है, और इसी काल में इनका अनुष्ठान विशेष प्रभावी रहता है।

मन्त्र-विधान

भगवती धूमावती की उपासना किसी निर्जन स्थान या श्मशान में की जाती है। किसी कारणवश यदि स्व-निवास पर ही करना पड़े तो अपने घर में इनकी मूर्ति, चित्र अथवा यन्त्र की स्थापना न करें। एक साबुत पान के पत्ते पर रोली, सिन्दूर अथवा हिंगुल से त्रिशुल की आकृति बनाकर, उस पर धूप दीप, नैवेद्य, पुष्प आदि अर्पित करके मन्त्र-जप आरम्भ करें। जप करते समय अपने हृदय में भावना करें कि भगवती धूमावती मेरे समस्त दुखों, शोकों, पापों, दरिद्रता, कलह,

रोगों, विघ्नों और शत्रुओं को अपने खाली सूप में भरकर प्रसन्नता पूर्वक घर से विदा हो रही हैं। मेरे उपर जो भी अभिचार कर्म, बुरी नजर, टोने-टोटके आदि हैं, उन सबको वे अपने सूप में समेट रही हैं। समस्त शत्रुओं तथा भूत-प्रेतादि दोषों को अपने उदर में ले रही हैं और सभी प्रकार की बाधाओं और कष्टों को अपने साथ लेकर वे प्रसन्न चित्त से कंही और जा रही हैं। प्रसन्नावस्था में वे मुझे अभय प्रदान कर रही हैं, जिसके कारण मेरे समस्त रोग, दोष, भय, शत्रु, पीड़ा, क्लेश, विघ्न-बाधाएं, ऋण आदि मुझे कभी भी पीड़ा नहीं दे पायेगें और मां का वरद हस्त सदैव मुझ पर बना रहेगा।

पूजा व मन्त्र-जप करने के उपरान्त पान के पत्ते को उठाकर किसी ऐसे स्थान पर विसर्जित करें, जंहा किसी का पैर न पड़े या कोई उलखने न पाये।

कुछ विशिष्ट ज्ञातव्य तथ्यः-

भगवती के मन्त्र का पुरश्चरण ८ लाख जप का है। ८० हजार मंत्रों से हवन किया जाता है। यदि ८० हजार आहुतियों की सामर्थ्य न हो तो उतनी संख्या में या उसकी दोगुनी संख्या में मंत्र जप कर लेना चाहिए और सामर्थ्यानुसार होम करा देना चाहिए। हवन में आक की लकड़ी का प्रयोग विशेष रूप से करना चाहिए। पूजन सामग्री में सभी सामान सफेद रंग का होना चाहिए। जैसे- सफेद वस्त्र, आसन, पुष्प, गंध, धूप-दीप, चंदन, नैवेद्य आदि सभी सफेद रंग के होने आवश्यक हैं। जप के लिए माला तुलसी, मोती या आक की लकड़ी की होनी चाहिए। कौए के पंखों का प्रयोग भी मार्जन, पूजन, हवन में करना चाहिए। पान के पत्ते के स्थान पर कौए के पंखों का प्रयोग विद्वेषण आदि उग्र कार्यों में करना चाहिए। विद्वेषण, उच्चाटन आदि कर्मों में धतूरे के फल, बीज, जड़ आदि का अथवा कटेरी सफेद फूल वाली के पत्ते, जड़, लकड़ी का प्रयोग हवन में करें। हवन में काले तिलों का, शाकल्य में सफेद तिलों के स्थान पर उच्चाटन आदि कर्मो में करें। दरिद्रता दूर करने के लिए सफेद तिलों का प्रयोग ही करना चाहिए।

सर्व प्रथम विनियोग करें-

विनियोगः-   अस्य श्री धूमावती महामन्त्रस्य, पिप्लाद ऋषिः, निवृत छन्दः, ज्येष्ठा देवता, धूं बीजं, स्वाहा शक्तिः, धूमावती कीलकं, ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः-
पिप्लाद ऋषये नमः शिरसि।
निवृति छन्दसे नमः मुखे।
श्री ज्येष्ठा धूमावती देवतायै नमः हृदि।
धूं बीजाय नमः गुह्ये ।
स्वाहा शक्तये नमः पादयोः।
धूं कीलकाय नमः नाभौ।
विनियोगाय नमः सर्वांगे।

कर-न्यासः-

ॐ धां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ धीं शिरसे स्वाहा।
ॐ धूं शिखायै वषट्।
ॐ धैं कवचाय हुम्।
ॐ धौं नेत्र-त्रयाय वौषट्
ॐ धः अस्त्राय फट्।

ध्यान

विवर्णा चंचला कृष्णा दीर्घां मलिनाम्बरा।
विमुक्त कुंतला रूक्षा विधवा विरल द्विजा।।
काक-ध्वज-रथारूढ़ा विलम्बित पयोधरा।
शूर्म हस्तातित-रूक्षाक्षी धूमहस्ता वरान्विता।।
प्रबद्ध-घोषा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्य भयदा कलहास्पदा।।

अर्थात्- भगवती धूमावती का स्वरूप विवर्ण है, चंचल है और लम्बा शरीर है। मैले और फटे हुए वस्त्र हैं, उनका विधवाओं के समान वेश है तथा खुले हुए और रूखे केश हैं। वे कौए की ध्वजा वाले रथ में बैठी हैं। ढीले-ढाले लटके हुए स्तन और उनकी दंतावली विरल है, सूप उनके हाथ में है तथा रूखे नेत्र हैं। दरिद्रता की देवी भक्तों को वर तथा अभय मुद्रा में बैठी हैं। रोग, शोक, कलह तथा दरिद्रता के नाश के लिए मां धूमावती का ध्यान व उन्हें नमस्कार करता हूॅ।

इस प्रकार ध्यान करने के उपरान्त मंत्र जप करें।

मूल मन्त्रः- धूं धूं धूमावती ठः ठः ।।

इसके अतिरिक्त उनका एक अन्य मंत्र भी है, जो बहुत अधिक प्रभावी है-

ॐ धूं धूं धूमावति आपद् उद्धारणाय कुरू-कुरू स्वाहा ।।

....

स्वामी-वश्यकरी शत्रु-विध्वंसिनी स्तोत्र

भगवती वैष्णवी के इस स्तोत्र का पाठ उस सेवक को करना चाहिए जिसका स्वामी दुष्ट, क्रोधी, लालची व दुराचारी हो। इस स्तोत्र का पाठ ऐसी स्थिति में भी किया जा सकता है, जब वह आपकी सेवाएं समाप्त करने जा रहा हो अथवा जान-बूझकर आपका प्रमोशन ना कर रहा हो। यंहा स्वामी से तात्पर्य राजकीय अथवा निजि कम्पनियों के अधिकारियों से भी है। इस स्तोत्र के पाठ से साधक के शत्रुओं का भी नाश होता है।

विनियोगः- ॐ अस्य श्री स्वामिवश्यकरी शत्रुविध्वंसिनी स्तोत्र मंत्रस्य पिप्पलायन ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्रीरामचन्द्रो देवता, मम स्वामी-प्रीत्यर्थं मत् सकाशात् शत्रोः पिशाचवत् पलायनार्थे जपे विनियोगः।

इसके उपरान्त षडंग-न्यास करें-

ॐ रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ रीं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ रूं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ रैं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ रं अस्त्राय फट्।

इसके उपरान्त ध्यान करें-

ध्यान

ॐ कालाम्भोधर कांतिकायमनसं वीरासनाध्यासितम्
मुद्रां ज्ञानमयी दधानमपरां हस्ताम्बुजे जानुनी।
सीतां पार्श्वगतां शिरोरूहकरां विद्युन्निमं राघवम्।
पश्यन्तीं मुकुटं गदादिविविधं कल्पोज्ज्वलांगीं भजे।।

स्तोत्र

ॐ स्वामी-वश्य-करी देवी प्रीति-वृद्धि-करी मम।
शत्रु-विध्वंसिनी रौद्री त्रिशिरा सा विलोचनी।।१।।
अग्निर्ज्वाला रौद्रमुखी घोरदंष्ट्रा त्रिशूलिनी।
दिगंबरी मुक्तकेशी रणपाणिर्महोदरी ।।२।।
एकराड् वैष्णवी घोरे शत्रु-मुद्दिश्य ते विषम्।
प्रभु-मुद्दिश्य पीयूषं प्रसादादस्तु ते सदा ।।३।।

(साधक को इस स्तोत्र का तीन हजार की सख्ंया में अनुष्ठान लेकर पाठ करना चाहिए, तभी कार्य सिद्ध होता है।)

श्री शरभ शालुवराज प्रयोग

श्री शरभ शालुवराज का वर्णन श्री शिव पुराण में आया है। इन्हें पक्षिराज, आकाश भैरव आदि नामों से भी जाना जाता है। इस सम्बन्ध में काफी समय पूर्व एक

ग्रंथ प्रकाशित हुआ था, जिसका नाम था- आकाश भैरव कल्प । इस ग्रंथ की मैंने काफी खोज की परन्तु यह उपलब्ध नहीं हो सका। यदि किसी सज्जन के पास यह प्रति उपलब्ध हो तो कृपया अवगत कराने का कष्ट करें।

श्री शिव पुराण के अनुसार जिस समय नृसिंह भगवान ने हिरण्यकश्यपु को मार डाला तो उन्हें कुछ घमंड हो गया और प्रजा व देवता उनसे दुखी हो गये। उन्होंने भगवान नृसिंह की प्रार्थना भी की लेकिन उन्होंने अपने अत्याचार जारी रखे। अन्त में सब देवता लोग भगवान शिव के पास गये और उन्हें अपनी व्यथा बतायी। तब भगवान शिव ने अपना ऐसा स्वरूप बनाया जो एक ऐसे पक्षी का था, जिसका मुख उल्लू के समान था। उसके तीनों नेत्रों में अग्नि, सूर्य और चन्द्रमा का निवास था। उसका धड मनुष्य के समान था जो अपने चार हाथों में विशेष आयुध धारण किये हुए था। उसके नाखून वज्र के समान तीखे और उसके दो पंखों में मां काली और दुर्गा का निवास था। उसके हृदय में जठरानल और पेट में बडवानल जैसी भयंकर अग्नियों का निवास था, उसकी कमर के बाद का भाग किसी हिरण के समान एवं उसकी पूंछ किसी उग्र सिंह के समान लम्बी थी, उसके उरू में बीमारी और मृत्यु की उपस्थिति थी। भगवान शिव के ऐसे स्वरूप ने भगवान नृसिंह को चोंच मारकर मूर्छित कर दिया, अपनी पूंछ से भगवान नृसिंह के दोनों पैर बांध दिये, अपने दोनों पिछले पद भगवान नृसिंह के पैरों पर रखें और अपने अग्रपादों को नृसिंह देव की छाती पर और अपने हाथों से नृसिंह भगवान के हाथों को पकडकर आकाश में ले गये और उस समय निसहाय होकर भगवान नृसिंह अर्थात भगवान विष्णु ने उनकी स्तुति की और अपने स्वरूप का विसर्जन किया तब भगवान शिव ने प्रसन्न होकर उन्हें मुक्त किया और भगवान शिव के आशीर्वाद से उन्होनें अपना स्वरूप धारण किया।

यह बताना मेरा कर्तव्य है कि भगवान शरभ शालुव राज का प्रयोग भगवान नृसिंह से कई गुना अधिक घातक है। जो व्यक्ति इसके प्रयोग की कामना करता है, उसे उच्च्व कोटि का साधक होना अत्यावश्यक है। यदि कोई व्यक्ति इस शक्ति का साधन करना चाहता है तो उसे आत्मरक्षार्थ कवच एवं भगवान महामृत्युंजय मंत्र का प्रयोग करना चाहिए। इसके साथ-2 यह ध्यान रखना परमावश्यक है कि जंहा यह प्रयोग किया जाये, वंहा भगवान विष्णु की मूर्ति अथवा विग्रह नहीं होना चाहिए।

अपने किसी शिष्य के अनुरोध पर मैं यह शत्रु निग्रह प्रयोग यंहा दे रहा हूँ, जिसे श्री आकाश भैरव चित्रमाला मंत्र के नाम से जाना जाता है। अपने शत्रुओं के नाश के लिए यह प्रयोग किया जाता है। इसे आरम्भ करने से पूर्व अपने गुरूदेव एवं इष्टदेवता का ध्यान-पूजन कर निम्नांकित मंत्र के 108 पाठ करें। सामान्य कार्य सम्पादन के लिए 7 पाठ ही पर्याप्त हैं।

सर्व प्रथम अपने दायें हाथ में जल लेकर विनियोग करें, यथाः-

विनियोगः- ॐ अस्य श्री आकाशभैरवस्य चित्रमाला नाम मंत्रस्य श्री आनन्द भैरव ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री आकाश भैरव देवता, ह्रीं बीजं, हुं शक्तिः, मम अमुक नामकं शत्रु विनाशार्थे जपे विनियोगः।

हाथ का जल भूमि पर छोड दें। इसके बाद ऋष्यादि न्यास करें:-

ॐ श्री आनन्द भैरव ऋषये नमः शिरसि, ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे, ॐ आकाश भैरव देवतायै नमः हृदि, ॐ ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये, ॐ हुं शक्तयै नमः पादयोः, ॐ मम अमुक नामकं शत्रु विनाशार्थे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

इसके उपरान्त कर-न्यास करें-

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट्,
ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां हुं, ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

इसके बाद अंग न्यास करें:-

ॐ ह्रां हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्रैं कवचाय हुं, ॐ ह्रौं नेत्र-त्रयाय-वौषट्, ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

न्यास आदि करने के उपरान्त साधक को निम्नवत् ध्यान करना चाहिए-

ध्यान

सहस्रपाणि-पद-वक्त्रं, सहस्त्र-त्रय लोचनम् ।
सर्वाभिष्ट प्रदं देवं, स्मरेद् आकाश-भैरवम्।।

।। माला मंत्र।।

ॐ नमो भगवते आकाश भैरवाय निखिल-लोकप्रियाय प्रणत जन-परिताप-विमोचनाय सकल भूत निवारणाय सर्वाभिष्ट प्रदाय नित्याय सच्चिदानन्द-विग्रहाय सहस्त्र बाहवे सहस्त्र मुखाय सहस्त्र त्रिलोचनाय सहस्त्र चरणाय करालाय अखिलरिपु संहार कारणाय अनेक कोटि ब्रह्मकपाल माला अलंकृताय नर रूधिर मांस भक्षणाय महा बल पराक्रमाय महा दन्तराय विष विमोचनाय पर मत्रं तंत्र यंत्र विद्या विच्छेदनाय प्रसन्न वदनाम्बुजाय ऐह्येहि आगच्छागच्छ ममाभीष्टं आकर्षय आकर्षय आवेशय आवेशय मोहय मोहय भ्रामय भ्रामय द्रावय द्रावय तापय तापय सिद्धय सिद्धय बंधय बंधय भाषय भाषय क्षोभय-क्षोभय भूत-प्रेतादि-पिशाचान् मर्दय-मर्दय कुर्दम-कुर्दम पाटय-पाटय मोटय-मोटय गुम्फय-गुम्फय कम्पय-कम्पय ताडय-ताडय त्रोटय-त्रोटय भेदय-भेदय छेदय-छेदय चण्ड-वातांति-वेगाय सन्तत-गम्भीर-विजृम्भणाय संकर्षय-संकर्षय संक्रामय-संक्रामय प्रवेशय-प्रवेशय स्तोभय-स्तोभय स्तंभय-स्तंभय तोदय-तोदय खेदय-खेदय तर्जय-तर्जय गर्जय-गर्जय नादय-नादय रोदय-रोदय घातय-घातय वेतय-वेतय सकल रिपु-जनान्छिंदि-छिंदि भिन्दय-भिन्दय अन्धय-अन्धय रून्धय-रून्धय नर्दय-नर्दय बंधय-बंधय श्रीं ह्रीं क्लीं कल्याण-कारणाय श्मशानानंद महाभोग-प्रियाय देवदत्तं (शत्रु का नाम लें) आनय-आनय

दूनय-दूनय केलय-केलय मेलय-मेलय प्रपन्न वत्सलाय प्रति वदन दहनामृत किरण नयनाय सहस्त्र कोटि वेताल परिवृताय मम रिपून् उच्चाटय-उच्चाटय नेपय-नेपय तापय-तापय सेचय-सेचय मोचय-मोचय लोटय-लोटय स्फोटय-स्फोटय ग्रहण-ग्रहण अन्नत-वासुकी-तक्षक कर्कोटक -पद्म-महापद्म-शंख-गुलिक-महानाग भूषणाय स्थावर-जंगमानां विषं नाशय-नाशय प्राशय-प्राशय भस्मी-कुरू भस्मी-कुरू भक्तजन-वल्लभाय सर्व-स्थिति-संहारकारणाय कथय-कथय सर्व-शत्रून उद्रेकय-उद्रेकय विद्वेषय-विद्वेषय उत्सादय-उत्सादय बाधय-बाधय साधय-साधय दह-दह पच-पच शोषय-शोषय पोषय-पोषय दूरय-दूरय मारय-मारय भक्षय-भक्षय शिक्षय-शिक्षय समस्त भूतं शिक्षय-शिक्षय श्रीं ह्रीं क्लीं क्ष्म्रयैं अनवरत-ताण्डवाय आपद-उद्धारणाय साधु-जनान् तोषय-तोषय भूषय-भूषय पालय-पालय शीलय-शीलय काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्यं शमय-शमय दमय-दमय त्रासय-त्रासय शासय-शासय क्षिति-जल-दहन-मरूत-गगन-तरणि-सोमात्म-शरीराय शम-दमोपरति तितिक्षा-समाधान-श्रद्धां दापय-दापय प्रापय-प्रापय विघ्न-विच्छेदनं कुरू-कुरू रक्ष-रक्ष क्ष्म्रयै क्लीं ह्रीं श्रीं ब्रह्मणे स्वाहा।

++++++++

उपरोक्त पाठ करने से पूर्व अपने गुरूदेव का ध्यान करके अपने इष्ट देवता का पूजन करने के बाद उक्त माला मत्रं का 101 बार पाठ करने से समस्त कार्य सिद्ध होते हैं। सामान्य कार्य हेतु मात्र 7 पाठ ही पर्याप्त हैं ।

....

Sarv siddhi prada Bagala ashtottar shatnam stotram.

Brahmaastr-rupini devi mata shri Bagalamukhi,
Chichchhaktir-gyan-roopa cha brahmaanand-pradaayini.
Mahavidya maha-laxmi shrimat-tripur-sundari,
Bhuvneshi jaganmata parvati sarva-mangla.
Lalita Bhairvi Shanta Annapurna Kuleshwari,
Varahi Chhinnamasta cha Tara Kali Saraswati.
Jagat-pujya Maha-maya Kameshi Bhagmalini,
Daksh-putri Shivankastha Shiv-roopa Shiv-priya.
Sarv-sampat-kari devi sarv-lok-vashankari,
Ved-vidya Maha-pujya bhaktaa-dveshi bhayankari.

Stambh-roopa stambhini cha dusht-stambhan-karini,
Bhakt-priya maha-bhoga Shri-vidya Lalitambika.
Maina-putri shivaananda matangi Bhuvneshwari,
Naar-singhi Narendraa cha nrapa-arradhya Narottama.
Nagini nag-putri cha nag-raj-suta Uma,
Pitaamba peet-pushpa cha peet-vastr-priya shubha.
Peet-gandh-priya Rama Peet-ratnaarchita shiva,
Ardh-chandr-dhari devi Gada-mudgar-dhaarini.
Savitri tripada shuddha sadyo-raag-vivardhini,
Vishnu-roopa Jagan-moha Brahm-roopa Hari-priya.
Rudr-roopa rudr-shaktish-chinmayi bhakt-vatsalaa,
Lok-mata shiva sandhya Shiv-pujan-tatparaa.
Dhanaa-dhyaksha dhaneshi cha dharmdaa dhanda dhanaa,
Chand-darp-hari devi Shumbh-asur-nivharini.
Raj-rajeshwari devi Mahishasur-mardini,
Madhu-Kaitabh-hantri cha Rakt-been-vinaashini.
Dhumraksh-daitya-hantri cha Bhandaasur-vinashini,
Renu-putri Maha-maya Bhramari Bhramra-ambika.
Jvalamukshi Bhar-kali Bagala Shatru-vinaashini,
Indraani Indra-pujya cha guhya-mata guneshvari,
Vajr-paash-dharaa devi jivha-mudgar-dhaarini,
Bhakta-anand-kari devi Bagala Parmeshwari.

Shruti-phal (Result).

Ashtottar-shatam naamnam Bagala-yaastu yah Patthet,
Ripu-baadha-vinirmuktah Laxmi-sthairyam-vaapnuyaat.
Bhoot-pret-pishaachaascha grah-peeda-nivarnnam,
Rajano vash-maayanti sarv-aishvaryam-cha vindati.

Naana-vidya cha labhatay rajyam praapnoti-nishchitam,
Bhukti-muktim-vaapnoti sakshaat shiv-samo bhavet.
(This stotram belongs to Rudryaamalay Tantra)

<u>महाकाली शत्रु संहारक प्रयोग</u>

एक व्यक्ति के चाचा ने उसकी सारी सम्पत्ति हड़प ली, और उसे घर से निकाल दिया। उस व्यक्ति ने मां काली के मन्दिर में २१ दिनों तक ११ मालाएं निम्नलिखित साबर मन्त्र की पूर्ण की । कुछ ही दिनों के अन्तराल से उसके चाचा कुसंग में फंसकर दीन-हीन हो गये और साथ ही साथ उनके पैरों में फोड़े हो गये जिसके उसके दोनों पैर गल गये और कुछ समय बाद ही वह परमलोक का वासी हो गया ।

इसका नित्यप्रति कम से से १०८ पाठ सरसों के तेल का दीपक जलाकर करें। पाठ करते समय आपका स्वर दीन भाव से युक्त होना चाहिए और पुकार हृदय से।

<u>पाठ</u>

तुझसे अरज करूं, ऐ हो मात कालिका तुझसे अरज करूं।
मोहि जो सतावे, सुख पावै ना आठों याम वाको तुम भक्ष लेओ, ऐ हो।
...............मेरी मात कालिका! तुझसे अरज करूं ।
हाड़ तो हविष लेओ, खाल को खविष लेओ, गले पहनो मात! आंतन की जालिका........ तुझसे अरज करूं।
क्रोध करी धाओ, शीघ्र धाओ मात! मेरे शत्रु ;अमुक को गिराओ मात! वाके रूधिर से नहाओ, टीका लगाओ रक्त लाली का....तुझसे अरज करूं ।
देखके स्वरूप तेरा, योगिनी प्रसन्न होएं। लागे वाके घाव, पाके वाके पावं!
वाको अंगहू पिराए, वाको बालक मर जाये....मेरा दुख न सहो अब मात कालिका...... तुझसे अरज करूं ।
तुझसे अरज कंरू मेरी मात कालिका, तुझसे अरज करूं ।

श्री लक्ष्मी आराधना

सम्पूर्ण विश्व में प्राणी यदि सबसे अधिक किसी की कामना करता है तो वह है-धन । धन की प्राप्ति के लिए व्यक्ति कुछ भी करने के लिए तत्पर रहता ष्प्राप्त होता है, वह सर्वशक्तिमान कहलाने के स्तर पर पंहुचता है। जिस पर लक्ष्मी की कृपा बरसती है, संसार उसके आगे नतमस्तक हो जाता है।

तन्त्र शास्त्रों के अनुसार दस महाविद्याओं में 'श्री कमला' अन्तिम दसवीं महाविद्या कही जाती हैं। इन्हीं के द्वारा विश्व का पालन होता है। श्रीमद् भागवत के आठवें स्कन्ध के आठवें अध्याय में इनके उद्भव की कथा आयी है। देवताओं और राक्षसों के द्वारा अमृत-प्राप्ति के लिए किये समुद्र-मंथन के परिणाम स्वरूप इनका उद्भव हुआ और इन्होंने भगवान विष्णु का वरण अपने पति के रूप में किया। इस प्रकार ये वैष्णवी शक्ति है और भगवान विष्णु की लीला सहचरी हैं, इस प्रकार इनकी उपासना जगदाधार-शक्ति की उपासना है। देवता, मानव, सिद्ध, गन्धर्व और दानव - सभी इनकी कृपा के बिना पंगु है।

लक्ष्मी तन्त्र के अनुसार इनके दस मुख्य नाम हैं - महामाया, महाकाली, महामारी, क्षुधा, तृष्णा, निद्रा, कृष्णा, एक-वीरा, काल-रात्रि एवं दुरत्यया। जो भी भगवती के इन दशों नामों का भक्ति-पूर्वक स्मरण करता है, उसे सभी प्रकार से सुख, शान्ति की प्राप्ति होती है। स्थिर सम्पत्ति, उत्तम नारी एवं पुत्रों की प्राप्ति हेतु इनकी उपासना करनी चाहिए।

साधकों के लिए मैं यंहा मां लक्ष्मी के कुछ अति विशिष्ट एवं गोपनीय प्रयोग प्रस्तुत कर रहा हूँ। इनमें सबसे पहले लक्ष्मी-पंज्र-स्तोत्र का प्रस्तुतीकरण है। अर्थाभाव से जूझ रहे साधकों को निम्नवत् इसका प्रयोग करना चाहिए -

- बेल-वृक्ष के पत्ते के पृष्ठ भाग पर कमला-यन्त्र बनाकर उसके छहों कोणों में मंत्राक्षर लिखकर उसका पूजन करें, फिर भगवती का पूजन करके इस स्तोत्र का पाठ करें।

- विष्णु-सहस्त्र नाम का पाठ करके इस स्तोत्र का पाठ करें। इसके बाद पुनः विष्णु-सहस्त्र-नाम का एक पाठ करें। इस क्रम को पचास

हजार की सख्या में करने से साधक को महालक्ष्मी की पूर्ण कृपा प्राप्त होती है। इसकी आवृति संकल्प के साथ करें।

- यदि उपरोक्तानुसार पाठ करने में सक्षम न हों तो कम से कम एक क्रम नित्य प्रति करें।

साधना-काल में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए फलाहार अथवा शुद्ध एवं सात्विक भोजन करें।

प्रारम्भिक कर्म के उपरांत हाथ में जल लेकर विनियोग करें:-

विनियोग :- अस्य श्री लक्ष्मी-पंजर-महा मंत्रस्य श्री ब्रह्मा ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्री महालक्ष्मीः देवता, श्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, श्रिये कीलकं, मम सर्वाभिष्ट सिद्धयर्थे श्री लक्ष्मी-पंजर-स्तोत्र पाठे विनियोगः। विनियोग करने के उपरांत हाथ में लिया जल भूमि पर छोड़ दें।इसके बाद ऋष्यादि न्यास करें-

ऋबयादि-न्यास :- ॐ श्रीं ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि। पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे। श्री महा लक्ष्मी देवतायै नमः हृदि। श्रीं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः नाभौ। श्रिये कीलकाय नमः पादयोः। मम सर्वाभीष्ट सिद्धयर्थे श्री लक्ष्मी-पंजर-स्तोत्र पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

इसके बाद कर-न्यास करें -

कर-न्यास :-

ॐ श्रीं ह्रीं विष्णु-वल्लभायै अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं जगज्जनन्यै तर्जनीभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं सिद्धि सेवितायै मध्यमाभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं सिद्धि-दायै अनामिकाभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं वांछित-पूरिकायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं श्रिये नमः स्वाहा करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः ।

कर न्यास के उपरान्त अंग न्यास करें, यथा-

अंग-न्यास :-

ॐ श्रीं ह्रीं विष्णु-वल्लभायै हृदयाय नमः। ॐ श्रीं ह्रीं जगज्जनन्यै शिरसे स्वाहा। ॐ श्रीं ह्रीं सिद्धि-सेवितायै शिखायै वषट्। ॐ श्रीं ह्रीं

सिद्धि-दायै कवचाय हुम्। ॐ श्रीं ह्रीं वांछित-पूरिकायै नेत्र-त्रयाय वौषट्।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं श्रिये नमः स्वाहा अस्त्राय फट्।

न्यास क्रिया पूर्ण कर लेने के उपरान्त भगवती का ध्यान करें-

ध्यान

ॐ वंदे लक्ष्मीं पर-शिव-मयीं, शुद्ध-जाम्बू-नदाभाम्।
तेजोरूपां कनक-वसनां, सर्व भूषोज्ज्वलांगीम्।।
बीजापूरं कनक-कलशं, हेमपद्मं दधानामाद्याम्।
शक्तिं सकल-जननीं, विष्णु-वामांक-संस्थाम्।।
शरणं त्वां प्रपन्नोऽष्मि, महा-लक्ष्मि! हरि-प्रिये! ।
प्रसादं कुरू देवेशि!, मयि दुष्टेऽपराधिनि।।
कोटि-कन्दर्प- लावण्यां, सौन्दर्यैक-स्वरूपताम्।
सर्व-मंगल-मांगल्यां, श्री रामां शरणं ब्रजे।।

पाठ

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो विष्णु-वल्लभायै, महा-मायायै कं खं गं घं ङं नमस्ते नमस्ते।
मां पाहि-पाहि रक्ष-रक्ष धनं धान्यं श्रियम्, समृद्धिं देहि-देहि श्रीं श्रिये नमः स्वाहा।।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो जगज्जनन्यै, वात्सल्य-निधये चं छं जं झं ञं नमस्ते नमस्ते।
मां पाहि-पाहि रक्ष-रक्ष श्रियं प्रतिष्ठाम्, वाक-सिद्धिं मे देहि-देहि श्रीं श्रिये नमः स्वाहा।।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमः सिद्धि-सेवितायै,
सकलाभिष्ट-दान-दीक्षितायै टं ठं डं ढं णं नमस्ते नमस्ते ।
मां पाहि-पाहि रक्ष-रक्ष सर्वतोऽभयं,
देहि-देहि श्रीं श्रिये नमः स्वाहा।।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमः सिद्धि-दायै,

महा-अचिन्त्य-शक्तिकायै तं थं दं धं नं नमस्ते नमस्ते।
मां पाहि-पाहि रक्ष-रक्ष मे, सर्वाभीष्ट-सिद्धिम् -
देहि-देहि श्रीं श्रिये नमः स्वाहा।।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो वांछित-पूरिकायै,
सर्व-सिद्धि-मूल-भूतायै पं फं बं भं मं नमस्ते नमस्ते।
मां पाहि-पाहि रक्ष-रक्ष मे मनो-वांछिताम्,
सर्वार्थ-भूतां सिद्धिं देहि-देहि श्रीं श्रिये नमः स्वाहा।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं कमले कमलालये मह्यम्,
प्रसीद-प्रसीद महा-लक्ष्मि! तुभ्यं नमो नमस्ते।
जगद्धितायै यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं नमस्ते नमस्ते,
मां पाहि-पाहि रक्ष-रक्ष मे वश्याकर्षण-मोहन-
स्तम्भनोच्चाटन-ताडनाचिन्त्य-शक्ति-वैभवम्,
देहि-देहि श्रीं श्रिये नमः स्वाहा।।

श्री लक्ष्मी माला-मंत्र

श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं धात्र्यै नमः स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं श्रीं बीज-रूपायै नमः स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं विष्णु-वल्लभायै नमः स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सिद्धयै नमः स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं बुद्धयै नमः स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं धृत्यै नमः स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं मत्यै नमः स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं कान्त्यै नमः स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं शान्त्यै नमः स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सर्वतोभद्ररूपायै नमः स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं श्रीं श्रिये नमः स्वाहा ।

नमो भगवति ! ब्रह्मादि-वेद-मातर्वेदोद्भवे ! वेद-गर्भे ! सर्व-शक्ति-शिरोमणे श्री हरि-वल्लभे ! ममाभीष्ट पूरय-पूरय मां सिद्धि-भाजनं कुरू-कुरू अभयं

कुरू-कुरू सर्व-कार्येषु ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल मे सुप्त-शक्तिं दीपय-दीपय ममाहितान् नाशय-नाशय असाध्य-कार्यं साधय-साधय ह्रीं ह्रीं ह्रीं ग्लौं ग्लौं ग्लौं श्रीं श्रिये नमः स्वाहा ।

नोटः- इस माला मंत्र का १०८ बार जप करें। विशेष प्रभाव के लिए इसका हवन भी किया जा सकता है । हवन में गुग्गुल, शहद, कमल बीज, काले तिल, बूरा, केशर, माल पुए, खीर, शुद्ध घी, पंच मेवा आदि का प्रयोग किया जाता है।

श्री लक्ष्मी-कवच

शिरो मे रक्षताद् देवी, पद्मा पंकज-धारिणी ।
भालं पातु जगन्माता, लक्ष्मीः पद्मालया च मे ।।
मुखं पायान्महा-माया, दृशौ मे भृगु-कन्यका ।
घ्राणं सिन्धु-सुता पायान् नेत्रे मे विष्णु-वल्लभा ।।
कण्ठं रक्षतु कौमारी, स्कन्धौ पातु हरि-प्रिया ।
हृदयं मे सदा रक्षेत् सर्व-शक्ति-विधायिनी ।।
नाभिं सर्वेश्वरी पायात् सर्व-भूतालया च मे ।
कटिं च कमला पातु, ऊरू ब्रह्मादि-देवता ।।
जंघे जगन्मयी रक्षेत्, पादौ सर्व-सुखावहा।
श्री वीज-वास-निरता, सर्वांगे जनकात्मजा ।।
सर्वतोभद्र-रूपा मामव्याद् दिक्षु विदिक्षु च ।
विषमे संगटे दुर्गे, पातु मां व्योम-वासिनी ।।

पुत्री के शीघ्र विवाह हेतु प्रयोग

बच्चों के शीघ्र विवाह की कामना प्रत्येक माता-पिता की होती है। विशेबातः कन्याओं के विवाह की चिन्ता तो बनी ही रहती है। लड़कियों के विवाह में विलम्ब के अनेक कारण हो सकते हैं जिनमें मुख्यतः निम्नवत् हैं::-

- कभी-कभी कन्या को मंगल का दोष होता है, जिस कारण उसका विवाह होता तो है, लेकिन देर से होता है।
- कन्या के जन्मांग में लग्न-योग नहीं होता या फिर बहुत निर्बल होता है।
- कन्या के जन्मांग में काल-सर्प दोष अथवा अर्ध काल-सर्प दोष होता है।
- ऐसी स्थितियों में उनका निवारण किसी योग्य पंडित से कराना चाहिए । लेकिन यदि किन्हीं अपरिहार्य कारणों से ऐसा ना कर सकें तो पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास के साथ निम्नलिखित उपायों में से कोई एक उपाय करें :

मंगल ग्रह की अशुभता में :

- किसी भी शुक्ल पक्ष के मंगलवार के दिन किसी चौकोर लाल कपड़े में साबुत मसूर, लाल चंदन, लाल पुष्प, लाल रंग का कोई मिष्ठान एवं एक रूपया बांधकर नदी में बहा दें । ऐसा करने से मंगल दोष का परिहार होता है।
- अपने पूजा स्थल में मंगल ग्रह का यंत्र स्थापित करके उसके समक्ष ' ॐ भौमाय नमः' अथवा ' ॐ क्रां क्रीं

क्रौं सः भौमाय नमः' का जप प्रतिदिन मूंगे की माला से १०८ बार जप करें।

- कन्या को पीला पुखराज ५ रत्ती या सवा तीन रत्ती का धारण करना चाहिए।
- ५ या ६ रत्ती के टोपाज की अंगूठी ६० प्रतिशत चांदी, ३० प्रतिशत तांबा और १० प्रतिशत सोना मिलाकर बनवाएं।

इसके अतिरिक्त निम्नांकित उपाय भी कन्या के शीघ्र विवाह हेतु करणीय हैंः-

<u>प्रयोग संख्याः-१</u>

मंत्रः- शं शंकराय सकल जन्मार्जित पाप विध्वंसनाय पुरूषार्थ चतुष्टय लाभाय च पतिं मे देहि कुरू-कुरू स्वाहा ।

विधानः- सर्व प्रथम अपने पूजन-स्थल में भगवान शिव और मां पार्वती जी के चित्र अथवा मूर्ति की स्थापना करें। इसके बाद मिट्‌टी का एक कूंडा लेकर उसमें मिटटी भरें और केले का एक छोटा सा पौधा उसमें बो दें और उसे भगवान शिव और पार्वती के सामने रख दें । नित्य प्रति उसमें जल दें।अब उस पौधे को ११ बार सूत के कच्चे डोरे से लपेटकर उसका पूजन करें। तदोपरान्त कन्या उपरोक्त मंत्र की तीन माला जप करे। जप करने के बाद पौधे की १२ बार परिक्रमा करे। ऐसा करने से ग्रहों का कुप्रभाव भी नष्ट होगा और बांधाए भी नष्ट होंगी। जब तक परिणाम न मिले तब तक ऐसा ही करते रहें। भगवान शिव और मां पार्वती की कृपा से निश्चित ही सफलता
प्राप्त होगी ।

प्रयोग-२

मंत्रः-

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे !
सर्वस्यार्ति-हरे देवि! नारायणि नमोऽस्तु ते।।

यह प्रयोग २७ मंगलवार तक करना होता है। जिस कन्या के विवाह में निरन्तर बाधाएं आ रही हों, रिश्ते की बात बनते-बनते बिगड़ जाती हो या फिर अन्य कोई भी ऐसा कारण बन जाता हो तो कन्या को चाहिए कि वह इस प्रयोग को पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ करे। कन्या को चाहिए कि वह मंगलवार के दिन एक बार भोजन करे, गाय का दूध और फल ग्रहण करे और थोड़ा सा गुड़ और एक रोटी गाय को भी खिलाए।

विधान

मां दुर्गा के चित्र अथवा मूर्ति के सामने एक लकड़ी की चौकी रखें। लगभग १०० ग्राम चावल लेकर उनमें रोली मिलाकर, उन्हें उस चौकी पर रख दें। चावलों के ऊपर घी का दीपक रखकर जलाएं। इसके बाद दीपक की लौ पर ध्यान लगाकर कन्या उक्त मंत्र का १०८ बार जप करे। यह क्रिया प्रति मंगलवार को प्रातः काल में करनी होती है। जप आरम्भ करने से पहले कन्या को दुर्गा जी को तथा स्वयं को रोली, जिसे कुंकुम भी कहा जाता है, का टीका लगाना चाहिए। जप समाप्त होने के बाद जब दीपक बुझ जाये तो चौकी पर रखे गये चावलों को बाहर चबूतरे आदि पर डाल दें।

प्रयोग काल में ही अथवा प्रयोग के उपरान्त कन्या के लिए निश्चित रूप से अच्छे घरों से रिश्ते आयेगें। यदि इसमें थोडा विलम्ब भी हो तो प्रयोग बन्द न करें। उचित समय आने पर समस्त कार्य अच्छे से सम्पन्न होगा ।

प्रयोग-३

भगवान शिव के अभिषेक के सम्बन्ध में सभी लोग जानते हैं कि यह कितना श्रेष्ठ विधान माना जाता है। जिस प्रकार भगवान शिव अभिषेक से प्रसन्न होते हैं और इसका अनन्त फल प्राप्त होता है उसी प्रकार शीघ्र एवं श्रेष्ठ वर की प्राप्ति हेतु गणेश जी के तर्पण का विधान है जो इस प्रकार हैः-

सर्व प्रथम स्नानादि से निवृत होकर, एक अर्घ्य पात्र लेकर उसमें गंगाजल, सामान्य जल, चंदन-चूर्ण, गंध, केसर, सुगन्धित द्रव्य, अक्षत, दूर्वा एवं सुगन्धित पुष्प मिला दें। उसके उपरान्त किसी अन्य पात्र में गणेश जी का यंत्र अथवा मूर्ति स्थापित कर दें। फिर अपनी कामना व्यक्त करते हुए निम्नांकित मंत्र पढते हुए अर्घ्य पात्र में रखे गये जल से गणपति महाराज का तर्पण करेंः-

मंत्रः- श्रीं रति सहितं कामराजं तर्पयामि ।

यह प्रयोग शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथी से चतुर्दशी अर्थात ११ दिन तक प्रतिदिन १४४ बार किया जाता है।

वधु प्राप्ति हेतु लड़के भी इस प्रयोग को कर सकते हैं, लेकिन मंत्र में थोडा परिवर्तन हो जाता है, यथाः-

श्री कामराज सहितं रतिं तर्पयामि ।

काल सर्प योगः कारण एवं निवारण

जब जन्म कुण्डली में राहु या केतु के मध्य समस्त ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प योग कहलाता है।

हमारे नक्षत्र मण्डल में सात ग्रहों का प्रत्यक्ष रूप से भौतिक आस्तित्व है, लेकिन राहु-केतु का कोई भौतिक आस्तित्व नहीं है। यही कारण है कि इन्हें छाया ग्रह कहा जाता है।

प्राचीन ग्रंथों के अनुसार राहु के पिता विपुचिति दानव थे और माता दानवराज हिरण्यकशिपु की पुत्री सिंहिका थी। समुद्र-मंथन के उपरान्त प्राप्त अमृत का छलपूर्वक पान करने के कारण भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से राहु का शिर काट दिया था, लेकिन चूंकि उसने अमृत पान कर लिया था इसलिए वह अमर हो गया । विवशतावश भगवान ने उस दानव के कटे शिर को राहु एवं धड़ को केतु के रूप में नौ ग्रहों में स्थान प्रदान किया।

यदि फलित ज्योतिष के अनुसार देखा जाये तो नैसर्गिक रूप से राहु और केतु, सूर्य और चन्द्रमा के शत्रु हैं। बुध, शुक्र और शनि राहु के मित्र हैं, जबकि गुरू सम तथा मंगल शत्रु हैं। इसी प्रकार केतु के मित्र हैं- शुक्र और मंगल । बुध और गुरू सम है और शनि इसके शत्रु हैं। कन्या राहु की उच्च राशि है और मिथुन में २० अंश का परमोच्च तथा धनु में २० अंश का परम नीच होता है। केतु की स्वराशि मीन है और यह धनु में ६ अंश का परमोच्च और मिथुन में ६ अंश का परमनीच होता है। अन्य ग्रहों के समान राहु-केतु की सातवीं दृष्टि नहीं होती, केवल पांचवी और नवीं दृष्टि होती है।

राहु-केतु की गति शूद्र, दिशा नैर्ऋत्य, पंचधातु, तमोगुणी, कषाय-रस, क्रमशः काला एवं धब्बेदार मिश्रित रंग माना गया है। राहु का रत्न गोमेद और केतु का रत्न लहसुनिया है।

राहु का प्रभाव शनि देवता के समान है, और इनका आघात एवं प्रहार अचूक एवं महाभयानक होता है।

राहु ग्रह घमंड, राजनीति, तस्करी, षड़यंत्र, शिकार, शराब, अपहरण, कुतर्क, दादागिरी, देश-निकाला, सर्प, हवा, मैथुन, म्लेच्छ, परनिंदा, कपट, गांजा-भांग, अफीम, सिगरेट, विद्रोह, दुर्गुण, मजदूर, सफाई, पैथोलोजिस्ट, गोबर, श्मशान, कर्मचारी, उल्टी, विषजन्यरोग, आदि का प्रतिनिधित्व करता है। जबकि केतु ग्रह जादू-टोना, इन्द्रजाल, चमत्कारी कार्य, गड़ा हुआ धन, अचानक भाग्योदय, वेद-शाास्त्रों का अधिनायक, चर्म रोग, गुप्त बल, वर्णशंकर, भूख से उत्पन्न कष्ट, दादी, नाना, सौतेला पिता, दत्तक पुत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

इन दोनों छाया-ग्रहों का अपना प्रभाव नहीं होता बल्कि ये जिस ग्रह के साथ होते हैं उसी के स्वभाव के अनुसार फल प्रदान करते हैं। अकेले होने पर जिस ग्रह की राशि में होते हैं, उसी ग्रह का फल प्रदान करते हैं।

कालसर्प योग का प्रभावः-

काल सर्प योग से प्रभावित जातक को अनेक प्रकार की मुसीबतें , कष्ट, अपमान, झेलने पड़ते हैं। वास्तविकता यह है कि ऐसे लोग जीवन तो जी रहे होते हैं, लेकिन अपने लिए नहीं बल्कि केवल दूसरों के लिए। ऐसे लोगों को हमेशा शाारिरिक कष्ट लगा रहता है। पढाई में रूकावट, पैसे की बरबादी, विश्वासघात और गलत फहमी आदि होना इसकी पहचान मानी जाती है। इस योग के कारण अन्य खूब अच्छे-२ योग भी अपना पूर्ण फल प्रदान नहीं कर पाते। इस योग से प्रभावित जातक सदैव परेशान ही रहता है। उसकी विद्या-प्राप्ति में रूकावटें आती हैं, उसे शारिरिक कष्ट लगा रहता है, उसने जो विद्या प्राप्त की है, उसका समुचित उपयोग नही होता है।वह गलतफहमी का शिकार रहता है, उसके पैसे की बरबादी होती है और यहां तक भी होता है कि कभी-२ उसके पास पैसे का अम्बार लग जाता है, लेकिन कभी-२ वह एक रूपये के लिए भी मोहताज हो जाता है। उसे घर से बाहर रहना पड़ता है, मानसिक अशांति से जूझना पड़ता है , उसे धन-प्राप्ति नहीं होती, संतान की प्राप्ति उसे दूर का ख्वाब लगती है और उसका गृहस्थ जीवन भी कलह-युक्त हो जाता है।

- इस योग से प्रभावित जातक को निरंतर बुरे स्वप्न आते हैं और स्वप्न में सर्प दिखायी देते हैं। अकाल मृत्यु का डर, अथवा कुछ अशुभ होने की आशांका मन में समाई रहती है। ऐसा जातक पूरा मन लगाकर कार्य करता है परन्तु उसका फल उसे प्राप्त नहीं होता। वह जो भी कार्य करता है, उसका परिणाम उसे प्राप्त नहीं होता और यदि होता भी है तो बहुत देर से होता है । उसे जो पद-प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए वह उसे नहीं मिलती और

उसका श्रेय दूसरे ले जाते हैं। सामान्यतः ऐसे जातकों को मिलने वाले परिणाम निम्नवत् हो सकते हैंः–

- भाई–बंधु रिश्तेदार आदि धोखा देते हैं। भाईयों का सुख नहीं मिलता ।
- पत्नी को बार–बार गर्भ गिरने की समस्या आती है।
- ऐसा जातक आजीवन संघर्षरत रहता है। उसका भाग्य साथ नहीं देता।
- दैहिक एवं मानसिक कष्ट भोगने पड़ते हैं, स्वास्थय साथ नहीं देता।
- कार्य व्यवसाय में दिवाला निकल जाता है अथवा भारी क्षति उठानी पड़ती है।
- ऐसे जातकों की पैत्रिक सम्पत्ति नष्ट हो जाती है अथवा उसे ऐसी सम्पत्ति से वंचित कर दिया जाता है।
- घर में अकाल मृत्यु होती रहती है।
- संतान कष्ट होता है या फिर संतान का विवाह उचित समय पर नहीं होता है।
- अदालतों या थानों के चक्कर लगाने पड़ते है।
- ग्रह–क्लेश अथवा घर में कलह होती रहती है।
- पत्नी या पति अनुकूल नहीं मिलता।
- नौकरी अथवा व्यवसाय में बार–बार असफलता हाथ लगती है।
- मन अशांत रहता है और अज्ञात भय बना रहता है।
- संचित धन–सम्पदा का अचानक समाप्त हो जाना ।
- संतान सुख से असंतुष्टि, उनकी शिक्षा में बाधा आना अथवा संतान का जिद्‌दी एवं अनियंत्रित होना ।
- जल, नदी, तालाब आदि को देखकर भय लगना ।

- स्वयं के साथ दुर्घटनाएं घटित होना ।
- वायवी शक्तियों, शत्रुओं द्वारा किये गये अभिचार कर्मों से पीड़ित होना।

काल-सर्प योग क्या हैः-

पृथ्वी की दो प्रकार की गतियां होती हैं- दैनिक गति, जिसे परिभ्रमण एवं वार्षिक गति, जिसे परिक्रमण कहा जाता है। पृथ्वी का सूर्य की ओर घूमने का मार्ग तथा चन्द्र का पृथ्वी के चारों ओर घूमने का मार्ग अलग-अलग हैं। जंहा ये एक दूसरे को क्रास करते हैं, उसी छाया को राहु व केतु कहा जाता है। राहु व केतु की अपनी कोई राशि नहीं होती। राहु का जन्म नक्षत्र भरणी और केतु का आश्लेषा कहा गया है। भरणी का देवता काल व आश्लेषा का देवता सर्प हैं। इन्ही काल व सर्प के मिलने से 'कालसर्प योग' नामक योग उत्पन्न होता है। सर्प का मुख राहु तथा पूंछ केतु हैं।

कुण्डली में समस्त ग्रह एक भाव में आ सकते हैं लेकिन राहु व केतु कभी एक भाव में नहीं आ सकते। वे सदैव एक दूसरे से सातवे भाव अर्थात १८० अंश पर ही रहते है। यही कारण है कि सर्प के सिर वाले भाग को राहु व धड़ वाले भाग को केतु की संज्ञा दी जाती है।

राहु नागलोक का प्रतिनिधित्व करता है। जातक की मृत्यु होने के उपरान्त यदि उसकी वासना परिवार में ही अटकी रहती है तो वह नाग योनि में ही रहता है। वासनाओं के कारण जब उसका पुनः जन्म होगा तो उसकी कुण्डली में काल-सर्प योग होगा। इसके अतिरिक्त ज्योतिषिय ग्रंथो में अनेक प्रकार के शापों का वर्णन आता है, जिनमें- पूर्वजन्मकृत पितृशाप, गुरूशाप, पत्नीशाप, प्रेतशाप, सर्पशाप आदि प्रमुख हैं। जो जातक सर्पशाप से ग्रसित होता है, उसकी कुंडली में कालसर्प योग होता है।

- सामान्यतः करीब ५७६ प्रकार के कालसर्प योग बनते हैं, लेकिन यदि शनि से सम्बन्ध बनाकर पुष्टि करें तो हजारों प्रकार के कालसर्प योग बनते हैं। मुख्यतः यह योग दो प्रकार से बनता है। राहु के मुख की ओर से समस्त ग्रह आएं तो सम्मुख कालसर्प योग और राहु के दांयी ओर से समस्त ग्रह आएं तो उसे

विपरीत काल सर्प योग कहा जाता है। इन्हे उदित एवं अनुदित भी कहा जाता है। उदित कालसर्प योग मुख की ओर से बनता है, जो बहुत कष्टप्रद होता है क्योंकि राहु सदैव वक्री होता है। इसकी अपेक्षा अनुदित कालसर्प योग कम कष्ट देने वाला होता है।

जब कोई ग्रह राहु केतु के साथ हो और राहु से कम अंशों पर हो तो वह कालसर्प योग कष्टदायक होता है, लेकिन यदि राहु से अधिक अंशों पर स्थित ग्रह साथ हो तो वह कालसर्प भंग योग की श्रेणी में आकर कम कष्टदायी हो जाता है।

कालसर्प योग को अशुभ योग माना जाता है लेकिन ऐसा नहीं है। कभी-कभी ऐसा योग जातक को बुलंदियों पर भी पहुंचा देता है। पं० जवाहरलाल नेहरू, सम्राट अकबर, राजीव गांधी, सचिन तेंदुलकर आदि इसके उदाहरण हैं। परन्तु यह योग कितना शुभ होगा और कितना अशुभ होगा, इसकी गणना जातक की कुंडली के गहन अध्ययन से ही संभव है।

वास्तविकता यह है कि ६० प्रतिशत व्यक्ति कालसर्प योग से प्रभावित होते हैं । जिनके भी जन्मांग में यह योग होता है उन्हें अनेक प्रकार के कष्ट, अपमान, मुसीबतें सहने पड़ते हैं। एक इस योग के कारण दूसरे अनेक अच्छे योग भी अपना फल प्रदान नहीं कर पाते हैं।

कालसर्प योग के उपाय

१. राहु केतु के मंत्रों का जप करें -

राहु-मंत्रः ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहुवे नमः ।

केतु-मंत्रः ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतुवे नमः ।

२. शिवलिंग पर चांदी के नाग व नागिन का जोड़ा चढांए ।

३. कालसर्प यंत्र के सामने ४३ दिनों तक सरसों के तेल का दीपक जलाकर - 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का यथाशक्ति जप करें। पूजन में मिश्री तथा चन्दन का उपयोग करना चाहिए। इसमें रोली, या सिंदूर का प्रयोग नहीं किया जाता । इसके साथ-साथ महामृत्युंजय मंत्र -

'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।

ऊर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।

का भी जप करना चाहिए।

४. महामृत्युंजय अनुष्ठान किसी योग्य ब्राह्मण से कराएं।

५. भगवान विष्णु या शिवजी का पूजन अवश्य करें।

६. एक वर्ष तक नवनाग स्तोत्र का पाठ करें, जो निम्नवत हैः-

<u>नवनाग-स्तोत्र</u>

अनन्तम् वासुकिं शेषं पद्मनाभं च कंबलम्।
शंखपालं धार्तराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा।।
एतानि नव नामानि नागानाम् च महात्मनाम् ।
सायंकाले पठेन्नित्यं प्रातःकाले विशेषतः ।।
तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्।

७. कालसर्प योग की शान्ति का सबसे सरल और प्रभावी उपाय यह है कि अपने घर और कार्यालय में मोर पंख रखें और सुबह-शााम उसे अपने शरीर पर स्पर्श करायें।

8. एक रेंगते हुए डिजाईन का चांदी का सर्प बनवाकर उसके फन पर गोमेद तथा पूंछ में लहसुनिया रत्न जड़वाकर नागपंचमी, अमावस्या अथवा शिवरात्रि के दिन 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का जप करते हुए नाग को नदी में प्रवाहित कर दें।

9. नाग-प्रतिमा की अंगूठी धारण करें।

10. शिवरात्रि, नागपंचमी या सोमवार को नाग-नागिन का जोड़ा बनवाकर शिवलिंग पर चढायें। इसके बाद सर्प सूक्त का पाठ एवं 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र की एक माला जप करके इस जोड़े को नदी में विसर्जित कर दें।

11. १०८ दिनों तक हनुमान चालीसा का पाठ करें।

12. रात्रि में सोते समय जौं के कुछ दाने अपने सिरहाने रखकर प्रातः पौं फटने के समय उन्हें पक्षियों को खिलाएं ।

13. यदि व्यक्ति समर्थ हो तो नाग मन्दिर का निर्माण कराये और उसमें नागदेव की पत्थर की प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठित स्थापना कराये।

14. बुधवार के दिन एक मुठ्ठी काले उड़द लेकर किसी काले कपड़े में बांधकर उस पर राहु-मंत्र का यथाशक्ति जप करके किसी चाण्डाल को दक्षिणा सहित दान करें या फिर उसे किसी नदी में प्रवाहित कर दें। यह क्रिया लगातार ७२ दिनों तक करनी होती है। इससे निश्चित ही कालसर्प का प्रभाव दूर हो जाता है।

15. श्री कार्तवीर्याजुन मंत्र का ३३-३३ हजार जप का अनुष्ठान १० बार कराने से कालसर्प योग का दुष्प्रभाव दूर होकर राजयोग के समान भाग्यवर्धक शुभ प्रभाव मिलने लगता है और जातक राजयोग का लाभ प्राप्त करता है।

16. कालसर्प योग शांति यंत्र के समक्ष नित्य प्रति नवनाग स्तोत्र एवं सर्प-सूक्त का पाठ करना चाहिए। सर्प-सूक्त निम्नवत् हैः-

ब्रह्म लोकेषु ये सर्पाः शेषनाग पुरोगमाः।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
इन्द्रलोकेषु ये सर्पाः वासुकि प्रमुखादयः।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
कद्रवेयाश्च ये सर्पाः मातृभक्ति परायणा ।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
इन्द्रलोकेषु ये सर्पाः लक्षका प्रमुखादयः।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
सत्यलोकेषु ये सर्पाः वासुकिना च रक्षिता।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
मलये चैव ये सर्पाः कर्कोटक प्रमुखादयाः।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
पृथिव्यांचैव ये सर्पा ये साकेत वासिता।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
सर्वग्रामेषु ये सर्पाः वसंतिषु संच्छिता।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
ग्रामे वा यदिवारण्ये ये सर्पाप्रचरन्ति च ।

नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
समुद्रतीरे ये सर्पाये सर्पाजलवासिनः ।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
रसांतलेषु ये सर्पाः अनन्तादि महाबला।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।

....

कार्तवीर्यार्जुन-प्रयोग

कार्तवीर्यार्जुन-प्रयोग आज के समय में प्रत्येक साधक के लिए वांछाकल्पद्रुम के समान है। राजा तथा चोर आदि से पीड़ित होने पर, शस्त्र, अग्नि तथा जहर के प्रयोग होने पर, महामारी तथा बुरे स्वप्नों की बाधा होने पर, ग्रह-भय तथा रोग-भय होने पर, भूत-प्रेत, राक्षस, गंधर्व, बेताल, पिशाच, द्वारा ग्रस्त होने पर, महाभय अथवा महाविनाश के समय, घोर महामृत्यु का भय होने पर अथवा सर्वस्व-हरण हो जाने पर इस प्रयोग का फल अचूक होता है। इतना ही नहीं यदि किसी व्यक्ति का धन नष्ट हो गया हो, अथवा कोई धन उधार लेकर या अन्य किन्हीं कारणों से धन वापस ना कर रहा हो तो उस धन की वापस प्राप्ति के लिए कार्तवीर्यार्जुन प्रयोग बहुत ही प्रभावी होता है।

यह प्रयोग एक दुर्लभ प्रयोग है, जिसे मैं साधकों के लिए यहां लिख रहा हूँ।

कार्तवीर्यार्जुन-प्रयोग से अपरिचित साधकों को यंहा कार्तवीर्यार्जुन के विषय में संक्षेप में उल्लेख करना आवश्यक समझता हूँ। 'कार्तवीर्य' को अर्जुन, सहस्रार्जुन, कार्तवीर्यार्जुन, तथा हैहयाधिपति भी कहा जाता है। इनके पिता का नाम कृतवीर्य तथा माता का नाम शालधरा था। ये हैहय देश के राजा थे और इनकी राजधानी का नाम माहिष्मति था। कठोर तपस्या के कारण इन्होंने भगवान दत्तात्रेय से कई वरदान प्राप्त किये थे, जिनमें सहस्र भुजाएं और स्वर्ण-रथ मुख्य

थे। ये रावण के समकालीन थे और एक बाद इन्होंने उसे बन्दी भी बना लिया था, परन्तु उसके पिता महर्षि पुलस्त्य के कहने पर मुक्त कर दिया था। एक बार इन्होंने परशुराम जी के पिता जमदग्नि ऋषि की कामधेनु गाय का अपहरण कर दिया था तो परशुराम जी ने इनका वध कर डाला था।

प्रत्येक कार्य की सिद्धि के लिए इनके अलग-अलग मंत्र हैं। इसलिए जिस साधक का जो लक्ष्य हो, उसी से सम्बन्धित मंत्र का अनुष्ठान उसे करना चाहिए। वे मंत्र मैं क्रमशः लिख रहा हूँ।

धन-प्राप्ति के लिए:-

ॐ क्रों धनदकार्तवीर्यार्जुनाय नमः । जप संख्या- एक लाख

वशीकरण के लिएः-

ॐ ह्रीं क्रों वशीकरण कार्तवीर्याजुनाय नमः । जप संख्या- एक लाख

सर्वकामना सिद्धि के लिए :-

ॐ क्लीं क्रों कार्तवीर्य सर्व कामनायै नमः । जप संख्या-एक लाख

शत्रु-नाश के लिए :-

ॐ छ्रीं क्रों कार्तवीर्यार्जुनाय शत्रु-क्षय कामाय नमः। एक लाख

सर्वलोक-वशीकरण के लिएः-

ॐ ह्रीं क्रों क्लीं कार्तवीर्यार्जुनाय सर्वलोक वशीकरण कामाय नमः । उपरोक्त

उच्चाटन के लिए:-

ॐ क्रों कार्तवीर्यार्जुनाय उच्चाटन कामाय नमः। उपरोक्त

अभीष्ट-सिद्धि के लिए:-

ॐ हुं फट् कार्तवीर्यार्जुनाय अभीष्ट सिद्धि कामाय नमः। उपरोक्त

सर्व दुखों के नाश के लिए:-

ॐ क्रां क्रूं क्लीं कार्तवीर्यार्जुनाय सर्वदुख प्रशमन-कुपित-प्रसादन सर्वकामनायै नमः। जप संख्या एक लाख

सर्व कार्यों में बाधा-निवारण के लिए:-

ॐ क्रों गां गीं गूं गं नमः । सर्वकार्याविघ्न कामाय नमः । जप संख्या एक लाख

असाध्य की सिद्धि के लिए:-

ॐ गं नमः। क्रों कार्तवीर्यार्जुनाय नमः। जप संख्या चार लाख

सर्वरोग निवारण के लिए:-

ॐ दुख हर्ता कार्यवीर्यार्जुनाय सर्वरोग निवारण कामाय नमः। एक लाख

व्यापार-वृद्धि के लिएः-

ॐ क्लीं कार्तवीर्यार्जुनाय व्यापार कामाय नमः। एक लाख

राजा अथवा उच्चाधिकारी से कार्य कराने के लिएः-

ॐ क्लीं क्रों कार्तवीर्यार्जुनाय राजसमीप कामाय नमः। एक लाख

समस्त कार्यों की पूर्णता के लिये:-

ॐ क्रों ध्रीं भ्रूं आं ह्रीं क्रों श्रीं हुं फट् कार्तवीर्यार्जुनाय नमः। चार लाख

नष्ट अथवा गये हुए धन की प्राप्ति के लिएः-

ॐ कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा सहस्रबाहुकम्। यस्य स्मरण मात्रेण हृत नष्टं च लभ्यते ।।

घर से रूठकर अथवा अन्य किन्हीं कारणों से गये व्यक्ति को वापिस बुलाने के लिएः-

ॐ कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा सहस्रबाहुकम्। यस्य स्मरण मात्रेण (अमुक) हृत नष्टं च लभ्यते ।। जप संख्या एक लाख ।

कार्तवीर्यार्जुन-गायत्री मंत्र:-

ॐ कार्तवीर्यार्जुनाय विद्महे सहस्रकराय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।।

उपर्युक्त सभी मंत्रों के ध्यान, विनियोग, न्यास एवं विधान अलग-अलग हैं। इसलिए यदि किसी मंत्र का प्रयोग करें तो सर्वप्रथम किसी योग्य व्यक्ति से विधान का ज्ञान करने के उपरान्त ही आरम्भ करें।

घोर दारिद्रय-विनाशक-प्रयोग

धन्देश्वरी लक्ष्मी-तंत्र

{धन्देश्वरी देवी को सुरसुन्दरी, धनदा-यक्षिणी और दारिद्रय-विनाशक यक्षिणी के नाम से भी जाना जाता है। इनकी साधना करने वाले व्यक्ति को दरिद्रता इस प्रकार नहीं छू सकती, जिस प्रकार सर्पों का

विशााल समूह भी गरूड़ को स्पर्श नहीं कर सकता। ये देवी अपने साधक के दारिद्रय-शमन हेतु स्वयं प्रतिबद्ध हैं और स्वयं ही कहती है कि -' जो मुझे नित्य स्मरण करता है, उसकी दरिद्रता मिटाने के लिए मैं कृत-संकल्पित हूॅं और दासी के समान उसकी सेवा करती हूॅं। वह धनाधिपति हो जाता है, फिर उसके दारिद्रय की शंका ही कैसी ?' }

वास्तव में दरिद्रता मनुष्य के लिए सबसे बड़ा अभिशाप है। जंहा दरिद्रता की देवी निवास करती है, वंहा न कोई होम होता है, न कोई त्यौहार होता है और न ही उत्साह होता है। महालक्ष्मी जैसी उच्च कोटि देवी की साधना सम्पन्न कर सिद्धि प्राप्त करना सबके लिए सम्भव नहीं है, और न ही सबको ऐसे मार्गदर्शक की प्राप्ति होनी सम्भव है, जो ऐसी साधनाओं को निर्विघ्न पूर्ण करा सके। इसीलिए भगवती पार्वती ने लोक-कल्याण की भावना से दारिद्रय विनाशक एवं समस्त प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करने वाले इस धनदा-यक्षिणी तंत्र की साधना विधि को प्रकट करने हेतु भगवान आशुतोष से जिज्ञासा प्रकट की थी।

इस तंत्र का प्रकटीकरण परमपिता ब्रह्मा के द्वारा यक्षराज कुबेर के समक्ष सर्वप्रथम किया गया था, जो भगवान शिव और जगन्माता पार्वती के संवाद में स्पष्ट किया गया है। इस साधना की सिद्धि होने पर निश्चय ही साधक धन-धान्यादि समस्त सम्पत्तियों से परिपूर्ण हो जाता है। इस सिद्धि को प्राप्त करने में साधक को समय व श्रम भी अधिक लगाना नहीं पड़ता है, क्योंकि यह विद्या तांत्रिक रीति पर प्रस्तुत की गयी है। ब्रह्मदेव के मुख से प्रतिपादित तथा यक्षराज कुबेर के मुख से जन-जन तक पंहुचने वाली इस विद्या के प्रभाव से निर्धन से निर्धन व्यक्ति भी श्रेष्ठ तथा धनवान हो जाता है। **लेकिन इसके लिए गुरू-दीक्षा प्राप्त करना सबसे प्रथम कर्तव्य है।**

मंत्र एवं साधना-विधि :-

साधकों के लिए इस सर्वश्रेष्ठ धनदायी विद्या की प्रस्तुति मैं अपने अनुयायियों के लिए कर रहा हूँ। प्रस्तुतिकरण अत्यन्त ही सरल विधि-विधान के साथ किया जा रहा है। यदि इतने सरल विधि-विधान के उपरान्त भी कोई इस साधना को सम्पन्न न कर सके तो उसे 'अभागा' ही कहा जा सकता है।

मन्त्रः- इस महती धन्देश्वरी का साधना-मंत्र निम्नवत् हैः-

ॐ रं श्रीं ह्रीं धं धनदे रतिप्रिये स्वाहा ।

यह चौदह अक्षरों वाला मंत्र है, जो सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

साधना-विधि

यंहा साधकों के लिए सर्वाधिक सुफलदायी चतुर्दशाक्षरी मंत्र की विधि प्रस्तुत की जा रही है। फिर भी यदि कोई साधक अन्य किसी मंत्र की साधना में तत्पर हो तो केवल मंत्रवर्णन्यास में ही उसे सूक्ष्म परिवर्तन करना होगा, अन्य समस्त विधि यही होगी।

इस मंत्र का पुरश्चरण एक लाख जप, उसका दशांश होम, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश ब्राह्मण-भोज, करने के उपरान्त अपने गुरूदेव, माता-पिता, बड़े बुजुर्गों के आशीर्वाद लेने पर पूर्ण होता है। लेकिन यदि रात्रि काल में सात दिनों तक नित्यप्रति एक हजार आठ सौ की संख्या में भी इस मंत्र का जप किया जाये, तो भी मंत्र की सिद्धि हो जाती है।

इस मंत्र का पुरश्चरण आरम्भ करने से तीन दिन पूर्व ही क्षौर आदि कृत्य सम्पन्न कर प्रायश्चित के साथ चन्द्रायण व्रत करना चाहिए। यदि ऐसा करना सम्भव ना हो तो तो प्रायश्चित स्वरूप '**ॐ का उच्चारण** करते हुए पंचगव्य का पान करके उस दिन व्रत रखें और दस हजार गायत्री मंत्र का जप करें तथा अंत में तर्पण करें। गायत्री-विधान इस प्रकार हैः-

सर्वप्रथम देशकाल का उच्चारण करे ज्ञात एवं अज्ञात पापों के नाश हेतु एवं किये जाने वाले उक्त धनदा-यक्षिणी प्रयोग के अधिकार-प्राप्ति एंव इस मंत्र की सिद्धि हेतु दस हजार गायत्री मंत्र का संकल्प लें।

कर्ण पिशाचिनी-साधना

इस मंत्र को गुप्त त्रिकालदर्शी मंत्र भी कहा जाता है। इस मंत्र के साधक को किसी भी व्यक्ति को देखते ही उसके जीवन की सूक्ष्म से सूक्ष्म घटना का ज्ञान हो जाता है। उसके विषय में विचार करते ही उसकी समस्त गतिविधियों एवं क्रिया कलापों का ज्ञान हो जाता है।

कर्ण-पिशाचिनी-साधना वैदिक विधि से भी सम्पन्न की जाती है और तांत्रिक विधि से भी अनुष्ठानित की जाती है।यंहा वैदिक विधि द्वारा सम्पन्न की जाने साधना का वर्णन किया जा रहा है।

मंत्रः- ॐ लिंग सर्वनाम शक्ति भगती कर्ण-पिशाचनी चण्ड रूपी सच-सच मम वचन दे स्वाहा।

विधिः- किसी भी नवरात्र में भूत-शुद्धि, स्थान-शुद्धि, गुरू स्मरण, गणेश पूजन, नवग्रह पूजन से पूर्व एक चौकी पर लाल कपड़ा बिछाएं। उस पर तांबे का एक लोटा या कलश-स्थापना करें। कलश पर पानी वाला नारियल रखें। कलश के चारों ओर पान, सुपारी,सिंदूर व २ लड्डू रखें। कलश-पूजन करके साष्टांग प्रणाम करें।

इसके बाद कंधे पर लाल कपड़ा रखकर उपरोक्त मंत्र का जप करें। जप पूर्ण होने पर पहले सामग्री से, फिर खीर से और अन्त में त्रिमधु से होम करें। इसके उपरान्त क्षमा-याचना कर साक्षात देवी रूपी कलश को भूमि पर लेटकर दण्डवत प्रणाम करें। अनुष्ठान के दिनों में ब्रह्मचर्य का पालन एवं एकान्तवास करें। सदाचरण करते हुए सभी नियमों का पालन करें। झूठ, फरेब, अत्याचार, बेइमानी से दूर रहें।

समयः- नवरात्र । यदि ग्रहण काल में आरम्भ करें तो स्पर्श काल से १५ मिनट पूर्व आरम्भ करके मोक्ष के १५ मिनट बाद तक करें। ग्रहण-काल में नदी के किनारे अथवा श्मशान में जप करें। आवश्यक समस्त सामग्री अपने साथ रखें।

सामग्रीः- पान, सुपारी, लौंग, सिंदूर, नारियल, अगर-ज्योत, लाल वस्त्र, जल का लोटा, लाल चन्दन की माला, जप करने के लिए, और दो लड्डू ।

जप-संख्याः- एक लाख ।

हवन-सामग्रीः- सफेद चंदन का चूरा, लाल चन्दन का चूरा, लोबान, गुग्गल, प्रत्येक ३०० ग्राम, कपूर लगभग १०० ग्राम, लौंग १० ग्राम, अगर ५० ग्राम, तगर ५० ग्राम, केशर २.५ ग्राम, कस्तूरी १ ग्राम, बादाम गिरी ५०ग्राम, काजू ५० ग्राम, अखरोट गिरी ५० ग्राम, गोला ५०ग्राम, छुआरे ५०ग्राम, मिश्री का कूजा-१। इन सभी को बारीक करके मिला लें। इसमें घी भी मिलाएं। फिर खीर बनाएं। चावल कम दूध ज्यादा रखें। खीर में पांच मेवे डालैं। देशी घी, शहद, व चीनी भी डालें।

विशेषः- जप करने के उपरान्त १०,००० मंत्रों से हवन करें। हवन के दशांश का तर्पण, उसके दशांश यानि एक माला से मार्जन और उसके बाद १० कन्याओं एवं एक बटुक को भोजन कराकर गुरूदेव से आशीर्वाद प्राप्त करें ।

नोटः- उपरोक्त साधना के लिए गुरू-दीक्षा आवश्यक है, अन्यथा प्रयास असफल रहता है।

.++++++++++++++++

भौतिक पर-कृत-प्रयोग, बाधा, नजर आदि दूर करने हेतु प्रयोग

यंहा मैं ऐसे मंत्र का प्रयोग बताने जा रहा हूँ, जो किसी भी व्यक्ति पर किये गये पर-प्रयोग, बाधा, बुरी नजर आदि को हटाने में पूर्ण सक्षम है। मेरा अनुभव है कि यदि किसी व्यक्ति की बुरी नजर किसी भी व्यक्ति के रोजगार पर, उसकी सम्पत्ति पर, अथवा उसके सुख पर लग जाए तो अच्छा-खासा परिवार तबाह हो जाता है। प्रभावित व्यक्ति कर्ज, बीमारी, मुकदमों आदि में घिर जाता है, उसका सुख सम्पूर्णतः दुख में बदल जाता है।

यदि आप ऐसे ही प्रयोगों, बुरी नजर आदि से स्चयं को प्रभावित महसूस करते हैं तो इस निम्नांकित मंत्र का प्रयोग कीजिए और परिणाम मुझे बताईए।

मेरा पूर्ण विश्वास है कि आपको निश्चित रूप से इन समस्त व्याधियों से मुक्ति प्राप्त हो जाएगी। लेकिन इस मंत्र को गुरू से प्राप्त करना आवश्यक है, अन्यथा परिणाम संदेहात्मक ही रहेगा।

मंत्रः- **ॐ ह्रीं ब्रीं बिकट। वीर हनुमन्त। वीर मंत्र को मारो, उलट दो पाताल, काल जाल संघारो। जो धन जंहा से आवे, वंही को जाए। टोनहिन का टोना, ओझा को दण्ड, द्रोही शत्रु को मारो। न मारो तो माता अंजनि के बत्तीस धार का दूध हराम करो। सीता के सिर चोट पड़े, हुं फट् स्वाहा।**

मातंगी-तंत्र

भगवती मातंगी प्रचलित दश महाविद्याओं में से एक हैं, जो वशीकरण, सम्मोहन, ज्ञान, सर्वाभिष्ट की सिद्धि हेतु सर्वोपरि मानी जाती हैं। वाम मार्ग से उपासना करने पर ये अतिशीघ्र प्रसन्न होती हैं। इन्हें उच्छिष्ट चाण्डालिनी एवं सुमुखी के नाम से भी जाना जाता है। इनके मंत्रों का जप भोजन करने के

उपरांत जूठे मुख से करने का विधान है। जप करने के बाद जो भोजन आपने किया है, उसी भात से इनके मंत्र से होम करना चाहिए। मुख्य रूप से इनके मंत्र के प्रयोग निम्नवत् हैं:-

१. भात में दही मिलाकर एक लाख मंत्रों से आहुति देने से अधिकारी, राजा, मंत्री आदि साधक के वशीभूत हो जाते हैं।

२. समस्त विद्याओं में पारंगत होने के लिए साधक को मार्जार (बिलाव) के मांस से होम करना चाहिए।

३. खीर से होम करने से भी विद्या की प्राप्ति होती है।

४. धन-प्राप्ति के लिए साधक को बकरे के मांस से होम करना चाहिए।

५. जन-समूह को वशीभूत करने के लिए साधक को रजस्वला स्त्री का अन्दर का वस्त्र लेकर, उसके छोटे-छोटे भाग करके, उन्हें शहद और खीर में मिलाकर होम करना चाहिए।

६. लक्ष्मी प्राप्ति हेतु साधक को पान, घी व शहद से होम करना चाहिए।

७. स्त्री-आकर्षण के लिए साधक को तत्काल मारे गये बिलाव के मांस एवं उसके बाल घी, एवं शहद के साथ मिलाकर होम करना चाहिए।

८. स्त्री-आकर्षण एवं विद्या-प्राप्ति हेतु साधक को खरगोश के मांस से हवन करना चाहिए।

९. शत्रु को वशीभूत करने के लिए साधक को धतूरे की लकड़ी से जलाई गयी चिता की अग्नि में कोयल एवं कौए के पंखों से होम करना चाहिए।

१०. अपने शत्रुओं के मध्य कलह उत्पन्न करने के लिए साधक को कौवे और उल्लू के पंखों से होम करना चाहिए।

११. किसी भी स्त्री का गर्भ गिराने के लिए साधक को उल्लू के पंखों से होम करना चाहिए।

१२. किसी बंध्या स्त्री को पुत्र-प्राप्ति के लिए बेल वृक्ष के पत्तों को घी में मिलाकर एक हजार की संख्या में प्रतिदिन आहुति देते हुए एक माह तक प्रयोग करना चाहिए।

१३. किसी भी भाग्यहीन स्त्री को सौभाग्यवती बनाने के लिए बंधूक पुष्पों को शहद में मिलाकर होम करना चाहिये।

१४. अपनी अभिष्ट-सिद्धि के लिए साधक को किसी वन, एकांत स्थान, चौराहा, उजड़े हुए गांव, या फिर निर्जन स्थान पर भगवती मातंगी को बलि समर्पित करके जूठे मुंह से ५,००० मंत्रों का जप करना चाहिए।

इसके उपरांत मैं यहां मां मातंगी के मंत्र एवं उसके विधान का उल्लेख कर रहा हूॅ। सर्वप्रथम साधक को किसी भी मंत्र का जप करने से पूर्व उसका उत्कीलन करना चाहिए ।भगवती मातंगी का जो मंत्र मैं यंहा लिख रहा हूॅ, उसके उत्कीलन के लिए साधक को १० माला अग्रलिखित मंत्र का जप करना चाहिए-

उत्कीलन मंत्रः- ऐं ह्रीं सुमुख्यै नमः ।

इसके बाद मंत्र का विनियोग करें, यथा--

विनियोगः- अस्य श्री सुमुखी मंत्रस्य, भैरव ऋषिः, गायत्री छंदः, श्री सुमुखी देवता, आत्मनो-अभिष्ट सिद्धये, सुमुखी मंत्र जपे विनियोगः।

तदोपरांत षडंग-न्यास करें, यथा....

षडंग-न्यासः-

ॐ उच्छिष्ट चाण्डालिनि हृदयाय नमः।
ॐ सुमुखि शिरसे स्वाहा।
ॐ देवि शिखायै वषट्।
ॐ महापिशाचिनि कवचाय हुम्।
ॐ ह्रीं नेत्र-त्रयाय वौषट्।
ॐ ठः ठः ठः अस्त्राय फट्।

इसके बाद माता मातंगी का ध्यान करें, यथा---

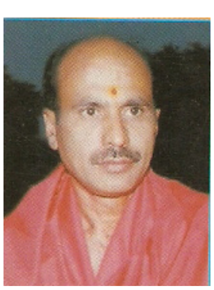

About The Author

Name :- Shri Yogeshwaranand Ji
Mb :- +919917325788, +919410030994

Email ;- shaktisadhna@yahoo.com
Web : www.anusthanokarehasya.com

Some Of the Books Written By Shri Yogeshwarnand Ji

1. **Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi**

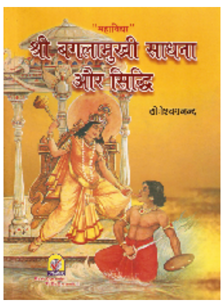

For Puchasing the books contact Dynamic Publication

Shri Satyendra Rastogi (Publisher) Mb. 9837036663

2. **Mantra Sadhna**

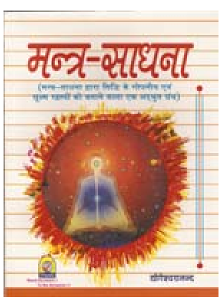

For Puchasing the books contact Dynamic Publication

Shri Satyendra Rastogi (Publisher) Mb. 9837036663

3. **Shodashi Mahavidya**

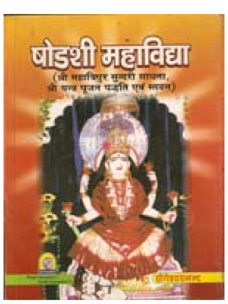

For Puchasing the books contact Dynamic Publication

Shri Satyendra Rastogi (Publisher) Mb. 9837036663